Website Link: mib.gov.in

मार्च 2023

अंगदान

से जीवनदान

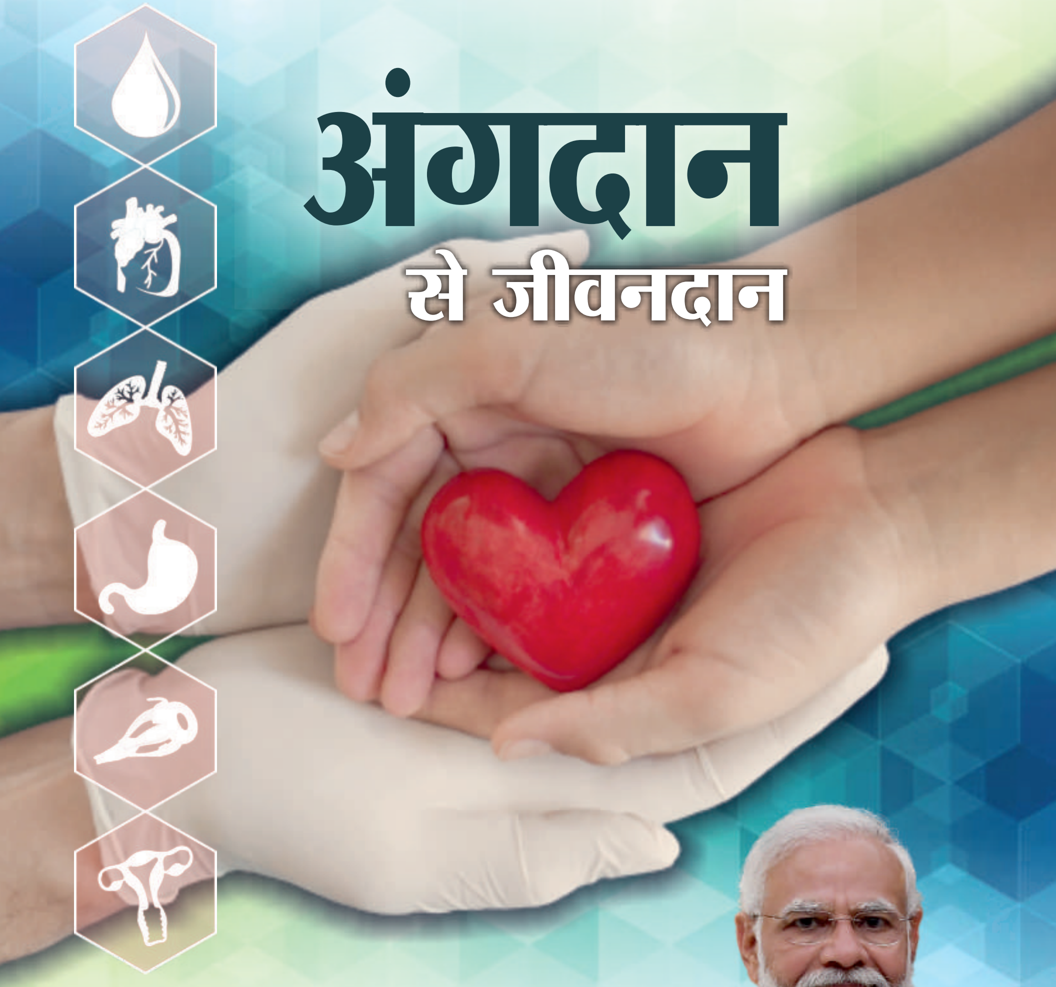

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 15

2.1 अंगदान
जीवन दान का नेक कार्य 16

2.1.1 अंगदान बचाए जान : जीवन का अनुपम उपहार
डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी का साक्षात्कार 20

2.1.2 अंगदान : समाज की निःस्वार्थ सेवा
आर. माधवन का साक्षात्कार 22

2.2 नारी शक्ति
महिलाओं के विकास से महिलाओं द्वारा विकास तक 26

2.2.1 चुनौतियाँ और सम्मान : भारतीय सेना में एक महिला के रूप में मेरा अनुभव
कैप्टन शिवा चौहान का साक्षात्कार 30

2.2.2 नगालैंड ने रचा इतिहास
सलहौतुओनुओ क्रूसे का साक्षात्कार 32

2.3 भारत की सौर ऊर्जा क्रान्ति
एक सतत भविष्य का निर्माण 36

2.4 सौराष्ट्र-तमिल संगमम्
भारत में 'विविधता में एकता' का उत्सव 40

2.4.1 सौराष्ट्र-तमिल संगमम् : 1,000 वर्ष पुराने सम्बन्धों का पुनर्जीवन
डॉ. मनसुख मंडाविया का साक्षात्कार 42

2.5 वीर लचित बोरफुकन की 400वीं जयंती 44

2.6 जम्मू-कश्मीर का नदरू FPO 46

2.7 जम्मू-कश्मीर के लैवेंडर किसान 50

03 प्रतिक्रियाएँ 57

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो ! नमस्कार

'मन की बात' में आप सभी का एक बार फिर बहुत-बहुत स्वागत है। आज इस चर्चा को शुरू करते हुए मन-मस्तिष्क में कितने ही भाव उमड़ रहे हैं। हमारा और आपका 'मन की बात' का ये साथ अपने निन्यानवें (99वें) पायदान पर आ पहुँचा है। आम तौर पर हम सुनते हैं कि निन्यानवें (99वें) का फेर बहुत कठिन होता है। क्रिकेट में तो 'नर्वस नाईनटीज़' को बहुत मुश्किल पड़ाव माना जाता है, लेकिन जहाँ भारत के जन-जन के 'मन की बात' हो, वहाँ की प्रेरणा ही कुछ और होती है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि 'मन की बात' के सौवें (100वें) एपिसोड को लेकर देश के लोगों में बहुत उत्साह है। मुझे बहुत सारे सन्देश मिल रहे हैं, फोन आ रहे हैं। आज जब हम आज़ादी का अमृतकाल मना रहे हैं, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तो सौवें (100वें) 'मन की बात' को लेकर आपके सुझावों और विचारों को जानने के लिए मैं भी बहुत उत्सुक हूँ। मुझे आपके ऐसे सुझावों का बेसब्री से इंतज़ार है। वैसे तो इंतज़ार हमेशा होता है, लेकिन इस बार ज़रा इंतज़ार ज्यादा है। आपके ये सुझाव और विचार ही 30 अप्रैल को होने वाले सौवें (100वें) 'मन की बात' को और यादगार बनाएँगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हमने ऐसे हज़ारों लोगों की चर्चा की है, जो दूसरों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं, जो बेटियों की शिक्षा के लिए अपनी पूरी पेंशन लगा देते हैं, कोई अपने पूरे जीवन की कमाई पर्यावरण और जीव-सेवा के लिए समर्पित कर देता है। हमारे देश में परमार्थ को इतना ऊपर रखा गया है कि दूसरों के सुख के लिए लोग अपना सर्वस्व दान देने में भी संकोच नहीं करते। इसलिए तो हमें बचपन से शिवि और दधीचि जैसे देह-दानियों की गाथाएँ सुनाई जाती हैं।

साथियो, आधुनिक मेडिकल साइंस के इस दौर में ऑर्गन डोनेशन, किसी को जीवन देने का एक बहुत बड़ा माध्यम बन चुका है। कहते हैं, जब एक व्यक्ति मृत्यु के बाद अपना शरीर दान करता है तो उससे 8 से 9 लोगों को एक नया जीवन मिलने की सम्भावना बनती है। संतोष की बात है कि आज देश में ऑर्गन डोनेशन के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है। साल 2013 में हमारे देश में, ऑर्गन डोनेशन के 5 हज़ार से भी कम केसेज़ थे, लेकिन 2022 में ये संख्या बढ़कर 15 हज़ार से ज़्यादा हो गई है। ऑर्गन डोनेशन करने वाले व्यक्तियों ने, उनके परिवार ने वाकई बहुत पुण्य का काम किया है।

साथियो, मेरा बहुत समय से मन था कि मैं ऐसा पुण्य कार्य करने वाले लोगों के 'मन की बात' जानूँ और इसे देशवासियों के साथ भी शेयर करूँ। इसलिए आज 'मन की बात' में हमारे साथ एक प्यारी सी बिटिया, एक सुन्दर गुड़िया के पिता और उनकी माता जी हमारे साथ जुड़ने जा रहे हैं। पिता जी का नाम है सुखबीर सिंह संधू जी और माता जी का नाम है सुप्रीत कौर जी, ये परिवार पंजाब के अमृतसर में रहते हैं। बहुत मन्नतों के बाद उन्हें एक बहुत सुन्दर गुड़िया, बिटिया हुई थी। घर के लोगों ने बहुत प्यार से उसका नाम रखा था – अबाबत कौर। अबाबत का अर्थ दूसरे की सेवा से जुड़ा है, दूसरों का कष्ट दूर करने से जुड़ा है। **अबाबत जब सिर्फ़ उनतालीस (39) दिन की थी, तभी वो यह दुनिया छोड़कर चली गई, लेकिन सुखबीर सिंह संधूजी और उनकी पत्नी सुप्रीत कौर जी ने, उनके परिवार ने बहुत ही प्रेरणादायी फैसला लिया। ये फैसला था– उनतालीस (39) दिन की उम्र वाली बेटी के अंगदान का, ऑर्गन डोनेशन का।** हमारे साथ इस समय फोन लाइन पर सुखबीर सिंह और उनकी श्रीमती जी मौजूद हैं। आइए, उनसे बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : सुखबीरजी नमस्ते।

सुखबीरजी : नमस्ते माननीय प्रधानमंत्री जी। सत श्री अकाल।

प्रधानमंत्रीजी : सत श्री अकालजी, सत श्री अकालजी, सुखबीरजी मैं आज 'मन की बात' के सम्बन्ध में सोच रहा था तो मुझे लगा कि अबाबत की बात इतनी प्रेरक है, वो आप ही के मुँह से सुनूँ, क्योंकि घर में बेटी का जन्म जब होता है तो अनेक सपने, अनेक ख़ुशियाँ लेकर आता है, लेकिन बेटी इतनी जल्दी चली जाए, वो कष्ट कितना भयंकर होगा, उसका भी मैं अंदाज़ लगा सकता हूँ। जिस प्रकार से आपने फैसला लिया, तो मैं सारी बात जानना चाहता हूँ जी।

सुखबीरजी : सर भगवान ने बहुत अच्छा बच्चा दिया था हमें, बहुत प्यारी गुड़िया हमारे घर में आई थी। उसके पैदा होते ही हमें पता चला कि उसके दिमाग में एक ऐसा नाड़ियों का गुच्छा बना हुआ है, जिसकी वजह से उसके दिल का आकार बड़ा हो रहा है, तो हम हैरान हो गए कि बच्चे की सेहत इतनी अच्छी है, इतना ख़ूबसूरत बच्चा है और इतनी बड़ी समस्या लेकर पैदा हुआ है तो पहले 24 दिन तक तो बहुत ठीक रहा बच्चा, बिलकुल नार्मल रहा। अचानक उसका दिल एकदम काम करना बंद हो गया, तो हम जल्दी से उसको हॉस्पिटल लेके गए। वहाँ डॉक्टरों ने उसको रिवाइव तो कर दिया, लेकिन समझने में टाइम लगा कि इसको क्या दिक्कत आई, इतनी बड़ी दिक्कत कि छोटा सा बच्चा और अचानक दिल का दौरा पड़ गया तो हम उसको इलाज के लिए पीजीआई चंडीगढ़ ले गए। वहाँ बड़ी बहादुरी से उस बच्चे ने इलाज़ के लिए संघर्ष किया, लेकिन बीमारी ऐसी थी कि उसका इलाज़ इतनी छोटी उम्र में सम्भव नहीं था। डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की कि उसको रिवाइव करवाया जाए। अगर छह महीने के आस-पास बच्चा चला जाए तो उसका ऑपरेशन करने की सोची जा सकती थी, लेकिन भगवान को कुछ और मंज़ूर था। उन्होंने केवल 39 डेज़ की जब हुई, तब डॉक्टर ने कहा कि इसको दोबारा दिल का दौरा पड़ा है, अब उम्मीद बहुत कम रह गई है, तो हम दोनों मियाँ–बीवी रोते हुए इस निर्णय पर पहुँचे कि हमने देखा था, उसको बहादुरी से जूझते हुए बार-बार ऐसे लग रहा था, जैसे अब चली जाएगी, लेकिन फिर रिवाइव कर रही थी तो हमें लगा कि इस बच्चे का यहाँ आने का कोई मकसद है तो उन्होंने जब बिलकुल ही जवाब दे दिया तो हम दोनों ने डिसाइड किया कि क्यों न हम इस बच्चे के ऑर्गन डोनेट कर दें। शायद किसी और की ज़िन्दगी में उजाला आ जाए, फिर हमने पीजीआई का जो एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक है, उनसे सम्पर्क किया और उन्होंने हमें गाइड किया कि इतने छोटे बच्चे की केवल किडनी ही ली जा सकती है। परमात्मा ने हिम्मत दी, गुरु नानक साहब का फलसफा है, इसी सोच से हमने डिसिज़न ले लिया।

प्रधानमंत्रीजी : गुरुओं ने जो शिक्षा दी है जी, उसे आपने जीकर के दिखाया है जी। सुप्रीतजी हैं क्या? उनसे बात हो सकती है ?

सुखबीरजी : जी सर।

सुप्रीतजी : हेल्लो।

प्रधानमंत्रीजी : सुप्रीतजी मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

सुप्रीतजी : नमस्कार सर, नमस्कार सर। ये हमारे लिए बड़ी गर्व की बात है कि आप हमसे बात कर रहे हैं।

प्रधानमंत्रीजी : आपने इतना बड़ा काम किया है और मैं मानता हूँ देश ये सारी बातें जब सुनेगा तो बहुत लोग किसी की ज़िन्दगी बचाने के लिए आगे आएँगे। अबाबत का ये योगदान है, ये बहुत बड़ा है जी।

सुप्रीतजी : सर ये भी गुरु नानक बादशाह जी की शायद बख्शीश थी कि उन्होंने हिम्मत दी ऐसा डिसिज़न लेने में।

प्रधानमंत्रीजी : गुरुओं की कृपा के बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता जी।

सुप्रीतजी : बिलकुल सर, बिलकुल।

प्रधानमंत्रीजी : सुखबीरजी जब आप अस्पताल में होंगे और ये हिला देने वाला समाचार जब डॉक्टर ने आपको दिया, उसके बाद भी आपने स्वस्थ मन से आपने और आपकी श्रीमती जी ने इतना बड़ा निर्णय किया, गुरुओं की सीख तो है ही है कि आपके मन में इतना बड़ा उदार विचार और सचमुच में अबाबत का जो अर्थ सामान्य भाषा में कहें तो मददगार होता है। ये काम कर दिया, ये उस पल को मैं सुनना चाहता हूँ।

सुखबीरजी– सर एक्चुली हमारी एक फैमिली फ्रेंड हैं प्रियाजी। उन्होंने अपने ऑर्गन डोनेट किए थे, उनसे भी हमें प्रेरणा मिली, तो उस समय तो हमें लगा कि शरीर जो है, पंच तत्वों में विलीन हो जाएगा। जब कोई बिछड़ जाता है, चला जाता है, तो उसके शरीर को जला दिया जाता है या दबा दिया जाता है, लेकिन अगर उसके ऑर्गन किसी के काम आ जाएँ, तो ये भले का ही काम है और उस समय हमें और गर्व महसूस हुआ, जब डॉक्टर्स ने ये बताया हमें कि आपकी बेटी, इंडिया की यंगेस्ट डोनर बनी है, जिसके ऑर्गन सक्सेसफुली ट्रॉन्सप्लांट हुए, तो हमारा सिर गर्व से ऊँचा हो गया, कि जो नाम हम अपने पैरेंट्स का, इस उम्र तक नहीं कर पाए, एक छोटा-सा बच्चा आ के इतने दिनों में

हमारा नाम ऊँचा कर गया और इससे और बड़ी बात है कि आज आपसे बात हो रही है इस विषय पे। हम प्राउड फील कर रहे हैं।

प्रधानमंत्रीजी : सुखबीरजी, आज आपकी बेटी का सिर्फ एक अंग जीवित है, ऐसा नहीं है। आपकी बेटी मानवता की अमर-गाथा की अमर यात्री बन गई है। अपने शरीर के अंश के ज़रिए वो आज भी उपस्थित है। इस नेक कार्य के लिए मैं आपकी, आपकी श्रीमतीजी की, आपके परिवार की सराहना करता हूँ।

सुखबीरजी : थैंक यू सर

प्रधानमंत्रीजी : **साथियो, ऑर्गन डोनेशन के लिए सबसे बड़ा जज्बा यही होता है कि जाते-जाते भी किसी का भला हो जाए, किसी का जीवन बच जाए। जो लोग, ऑर्गन डोनेशन का इंतजार करते हैं, वो जानते हैं कि इंतज़ार का एक-एक पल गुजारना, कितना मुश्किल होता है और ऐसे में जब कोई अंगदान या देहदान करने वाला मिल जाता है, तो उसमें ईश्वर का स्वरूप ही नज़र आता है। झारखंड की रहने वाली स्नेहलता चौधरी जी भी ऐसी ही थी, जिन्होंने ईश्वर बनकर दूसरों को ज़िन्दगी दी। 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरीजी, अपना हार्ट, किडनी और लीवर दान करके गईं।** आज 'मन की बात' में उनके बेटे भाई अभिजीत चौधरीजी हमारे साथ हैं। आइए उनसे सुनते हैं।

प्रधानमंत्रीजी : अभिजीतजी नमस्कार।

अभिजीतजी : प्रणाम सर।

प्रधानमंत्रीजी : अभिजीतजी आप एक ऐसी माँ के बेटे हैं, जिसने आपको जन्म देकर एक प्रकार से जीवन तो दिया ही, लेकिन और जो अपनी मृत्यु के बाद भी आपकी माताजी कई लोगों को जीवन देकर गईं। एक पुत्र के नाते अभिजीत आप ज़रूर गर्व अनुभव करते होंगे।

अभिजीतजी : हाँ जी सर।

प्रधानमंत्रीजी : आप अपनी माताजी के बारे में ज़रा बताइए, किन परिस्थितियों में ऑर्गन डोनेशन का फैसला लिया गया ?

अभिजीतजी : मेरी माताजी सराइकेला बोलकर एक छोटा-सा गाँव है झारखंड में, वहाँ पर मेरे मम्मी-पापा दोनों रहते हैं। ये पिछले पच्चीस साल से लगातार मॉर्निंग वॉक करते थे और अपनी हैबिट के अनुसार सुबह 4 बजे अपने मॉर्निंग वॉक के लिए निकली थीं।

उस समय एक मोटर साइकिल वाले ने इनको पीछे से धक्का मारा और वो उसी समय गिर गई, जिससे उनको सिर पर बहुत ज़्यादा चोट लगी। तुरंत हम लोग उनको सदर अस्पताल सरायकेला ले गए, जहाँ डॉक्टर साहब ने उनकी मरहम पट्टी की, पर खून बहुत निकल रहा था और उनको कोई सेंस नहीं था। तुरंत हम लोग उनको टाटा मेन हॉस्पिटल लेकर चले गए। वहाँ उनकी सर्जरी हुई, 48 घंटे के ऑब्जरवेशन के बाद डॉक्टर साहब ने बोला कि वहाँ से चॉन्स बहुत कम हैं। फिर हमने उनको एयरलिफ्ट कर के एम्स दिल्ली लेकर आए हम लोग। यहाँ पर उनकी ट्रीटमेंट हुई, तक़रीबन 7-8 दिन। उसके बाद पॉजिशन ठीक थी, एकदम उनका ब्लड प्रेशर काफी गिर गया। उसके बाद पता चला उनकी ब्रेन डेथ हो गई थी। तब फिर डॉक्टर साहब हमें प्रोटोकॉल के साथ ब्रीफ कर रहे थे ऑर्गन डोनेशन के बारे में। हम अपने पिताजी को शायद ये नहीं बता पाते कि ऑर्गन डोनेशन टाइप का भी कोई चीज़ होता है, क्योंकि हमें लगा, वो उस बात को अब्सोर्ब नहीं कर पाएँगे, तो उनके दिमाग से हम ये निकालना चाहते थे कि ऐसा कुछ चल रहा है। जैसे ही हमने उनको बोला कि ऑर्गन डोनेशन की बातें चल रही हैं, तब उन्होंने ये बोला कि नहीं-नहीं, ये मम्मी का बहुत मन था और हमें ये करना है। हम काफी निराश थे उस समय तक, जब तक हमें ये पता चला था कि मम्मी नहीं बच सकेंगी, पर जैसे ही ये ऑर्गन डोनेशन वाला डिसिज़न चालू हुआ, वो निराशा एक बहुत ही पॉजिटिव साइड चली गई और हम काफी अच्छे एक बहुत ही पॉजिटिव एन्वायरमेंट में आ गए। उसको करते-करते फिर हम लोग रात में 8 बजे कॉन्सलिंग हुई। दूसरे दिन हम लोगों ने ऑर्गन डोनेशन किया। इसमें मम्मी का एक सोच बहुत बड़ा था कि पहले वो काफी नेत्रदान और इन चीज़ों में सोशल एक्टिविटिज़ में ये बहुत एक्टिव थी। शायद यही सोच को लेकर के ये इतना बड़ा चीज़ हम लोग कर पाए और मेरे पिताजी का जो डिसिज़न मेकिंग था, इस चीज़ के बारे में, इस कारण से ये चीज़ हो पाया।

प्रधानमंत्रीजी : कितने लोगों को काम आया अंग ?

अभिजीतजी : इनका हार्ट, दो किडनी, लीवर और दोनों आँख, ये डोनेशन हुआ था तो चार लोगों की जान और दो जनों को आँख मिला है।

प्रधानमंत्रीजी : अभिजीतजी, आपके पिताजी और माताजी दोनों नमन के अधिकारी हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ और आपके पिताजी ने इतने बड़े निर्णय में, आप परिवार जनों का नेतृत्व किया, ये वाकई बहुत ही प्रेरक है और मैं मानता हूँ कि माँ तो माँ ही होती है। माँ एक अपने आप में प्रेरणा भी होती है, लेकिन माँ जो परम्पराएँ छोड़ कर के जाती हैं, वो पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक बहुत बड़ी ताकत बन जाती हैं। अंगदान के लिए आपकी माताजी की प्रेरणा आज पूरे देश तक पहुँच रही है। मैं आपके इस पवित्र कार्य और महान कार्य के लिए आपके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। अभिजीतजी धन्यवादजी और आपके पिताजी को हमारा प्रणाम जरूर कह देना।

अभिजीतजी : जरूर-जरूर, थैंक यू।

प्रधानमंत्रीजी : **साथियो, 39 दिन की अबाबत कौर हो या 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरी, इनके जैसे दानवीर, हमें जीवन का महत्त्व समझाकर जाते हैं। हमारे देश में आज बड़ी संख्या में ऐसे ज़रूरतमंद हैं, जो स्वस्थ जीवन की आशा में किसी ऑर्गन डोनेट करने वाले का इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे संतोष है कि अंगदान को आसान बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में एक जैसी पॉलिसी पर भी काम हो रहा है। इस दिशा में राज्यों के डोमिसिल की शर्त को हटाने का निर्णय भी लिया गया है, यानी अब देश के किसी भी राज्य में जाकर मरीज़ ऑर्गन प्राप्त करने के लिए रजिस्टर करवा पाएगा। सरकार ने ऑर्गन डोनेशन के लिए 65 वर्ष से कम आयु की आयु-सीमा को**

भी खत्म करने का फैसला लिया है। इन प्रयासों के बीच मेरा देशवासियों से आग्रह है कि ऑर्गन डोनेर, ज़्यादा-से-ज़्यादा संख्या में आगे आएँ। आपका एक फैसला, कई लोगों की ज़िन्दगी बचा सकता है, ज़िन्दगी बना सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, ये नवरात्र का समय है, शक्ति की उपासना का समय है। आज, भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। हाल-फिलहाल ऐसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने आए हैं। आपने सोशल मीडिया पर एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादवजी को ज़रूर देखा होगा। सुरेखा जी एक और कीर्तिमान बनाते हुए वंदे भारत एक्सप्रेस की भी पहली महिला लोको पायलट बन गई हैं। इसी महीने प्रोड्यूसर गुनीत मोंगा और डायरेक्टर कार्तिकी गोंज़ाल्विस उनकी डॉक्यूमेंट्री ‘एलिफेंट व्हिस्पर्स’ ने ऑस्कर जीतकर देश का नाम रौशन किया है। देश के लिए एक और उपलब्धि भाभा एटॉमिक रिसर्च सेन्टर की साइंटिस्ट, बहन ज्योतिर्मयी मोहंतीजी ने भी हासिल की है। ज्योतिर्मयी जी को केमिस्ट्री और केमिकल इंजीनियरिंग की फील्ड में IUPAC का विशेष अवॉर्ड मिला है। इस वर्ष की शुरुआत में ही भारत की अंडर-19 महिला क्रिकेट टीम ने टी-20 वर्ल्ड कप जीतकर नया इतिहास रचा। अगर आप राजनीति की ओर देखेंगे, तो एक नई शरुआत नगालैंड में हुई है। नगालैंड में 75 वर्षों में पहली बार दो महिला विधायक जीतकर विधानसभा पहुँची हैं। इनमें से एक को नगालैंड सरकार में मंत्री भी बनाया गया है, यानी राज्य के लोगों को पहली बार एक महिला मंत्री भी मिली हैं।

साथियो, कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात उन जाँबाज बेटियों से भी हुई, जो तुर्की में विनाशकारी भूकम्प के बाद वहाँ के लोगों की मदद के लिए गई थीं। ये सभी NDRF के दस्ते में शामिल थीं। उनके साहस और कुशलता की पूरी दुनिया में तारीफ़ हो रही है। भारत ने UN मिशन के तहत शांतिसेना में वुमेन-ओनली प्लॉटून की भी तैनाती की है।

आज, देश की बेटियाँ हमारी तीनों सेनाओं में, अपने शौर्य का झंडा बुलंद कर रही हैं। ग्रुप कैप्टन शालिजा धामी काम्बेट यूनिट में कमांड अपॉइंटमेंट पाने वाली पहली महिला वायुसेना अधिकारी बनी हैं। उनके पास करीब 3 हज़ार घंटे का फ्लाइंग एक्सपीरियंस है। इसी तरह भारतीय सेना की जाँबाज कप्तान शिवा चौहान सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी बनी हैं। सियाचिन में, जहाँ पारा माइनस सिक्स्टी (-60) डिग्री तक चला जाता है, वहाँ शिवा तीन महीनों के लिए तैनात रहेंगी।

नारी शक्ति

एक नए भारत की ऊर्जा

साथियो, यह लिस्ट इतनी लम्बी है कि यहाँ सबकी चर्चा करना भी मुश्किल है। ऐसी सभी महिलाएँ, हमारी बेटियाँ, आज भारत और भारत के सपनों को ऊर्जा दे रही हैं। नारीशक्ति की ये ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है।

मेरे प्यारे देशवासियो, इन दिनों पूरे विश्व में स्वच्छ ऊर्जा, रिन्यूएबल एनर्जी की खूब बात हो रही है। मैं जब विश्व के लोगों से मिलता हूँ, तो वो इस क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व सफलता की ज़रूर चर्चा करते हैं, खासकर भारत, सोलर एनर्जी के क्षेत्र में जिस तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, वो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। भारत के लोग तो सदियों से सूर्य से विशेष रूप से नाता रखते हैं। हमारे यहाँ सूर्य की शक्ति को लेकर जो वैज्ञानिक समझ रही है, सूर्य की उपासना की जो परम्पराएँ रही हैं, वो अन्य जगहों पर कम ही देखने को मिलते हैं। **मुझे ख़ुशी है कि आज हर देशवासी सौर ऊर्जा का महत्त्व भी समझ रहा है और क्लीन एनर्जी में अपना योगदान भी देना चाहता है। ‘सबका प्रयास’ की यही स्पिरिट आज भारत के सोलर मिशन को आगे बढ़ा रही है।** महाराष्ट्र के पुणे में ऐसे ही एक बेहतरीन प्रयास ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा है। यहाँ MSR-ओलिव हाउसिंग सोसायटी के लोगों ने तय किया कि वे सोसायटी में पीने के पानी, लिफ्ट और लाइट जैसे सामूहिक उपयोग की चीजें, अब सोलर एनर्जी से ही चलाएँगे। इसके बाद इस सोसायटी में सबने मिलकर सोलर पैनल लगवाए। आज इन सोलर पैनल्स से हर साल करीब 90 हज़ार किलोवॉट ऑवर बिजली पैदा हो रही है। इससे हर महीने लगभग 40,000 रुपये की बचत हो रही है। इस बचत का लाभ सोसायटी के सभी लोगों को हो रहा है।

साथियो, पुणे की तरह ही दमन-दीव में जो दीव है, जो एक अलग ज़िला है, वहाँ के लोगों ने भी एक अद्भुत काम करके दिखाया है। आप जानते ही होंगे कि दीव सोमनाथ के पास है। दीव भारत का पहला ऐसा जिला बना है, जो दिन के समय सभी ज़रूरतों के लिए शत्-प्रतिशत क्लीन एनर्जी का इस्तेमाल कर रहा है। दीव की इस सफलता का मंत्र भी सबका प्रयास ही है। कभी यहाँ बिजली उत्पादन के लिए संसाधनों की चुनौती थी। लोगों ने इस चुनौती के समाधान के लिए सोलर एनर्जी को चुना। यहाँ बंजर

ज़मीन और कई बिल्डिंग्स पर सोलर पैनल्स लगाए गए। इन पैनल्स से दीव में, दिन के समय, जितनी बिजली की ज़रूरत होती है, उससे ज़्यादा बिजली पैदा हो रही है। इस सोलर प्रोजेक्ट से बिजली खरीद पर खर्च होने वाले करीब 52 करोड़ रुपये भी बचे हैं। इससे पर्यावरण की भी बड़ी रक्षा हुई है।

साथियो, पुणे और दीव, उन्होंने जो कर दिखाया है, ऐसे प्रयास देशभर में कई और जगहों पर भी हो रहे हैं। इनसे पता चलता है कि पर्यावरण और प्रकृति को लेकर हम भारतीय कितने संवेदनशील हैं और हमारा देश, किस तरह भविष्य की पीढ़ी के लिए बहुत जाग्रत् है। मैं इस तरह के सभी प्रयासों की हृदय से सराहना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में समय के साथ स्थिति-परिस्थितियों के अनुसार अनेक परम्पराएँ विकसित होती हैं। यही परम्पराएँ, हमारी संस्कृति का सामर्थ्य बढ़ाती हैं और उसे नित्य नूतन प्राणशक्ति भी देती हैं। कुछ महीने पहले ऐसी ही एक परम्परा शुरू हुई काशी में। काशी-तमिल संगमम् के दौरान काशी और तमिल क्षेत्र के बीच सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों को सेलिब्रेट किया गया। **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना हमारे देश को मज़बूती देती है। हम जब एक-दूसरे के बारे में जानते हैं, सीखते हैं, तो एकता की ये भावना और प्रगाढ़ होती है। यूनिटी की इसी स्पिरिट के साथ अगले महीने गुजरात के विभिन्न हिस्सों में 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम्' होने जा रहा है। 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम्' 17 से 30 अप्रैल तक चलेगा।** 'मन की बात' के कुछ श्रोता ज़रूर सोच रहे होंगे कि गुजरात के सौराष्ट्र का तमिलनाडु से क्या सम्बन्ध है? दरअसल, सदियों पहले सौराष्ट्र के अनेकों लोग तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में बस गए थे। ये लोग आज भी 'सौराष्ट्री तमिल' के नाम से जाने जाते हैं। उनके खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक संस्कारों में आज भी कुछ-कुछ सौराष्ट्र की झलक मिल जाती है। मुझे इस आयोजन को लेकर तमिलनाडु से बहुत से लोगों ने सराहना भरे पत्र लिखे हैं। मदुरै में रहने वाले जयचंद्रनजी ने एक बड़ी ही भावुक बात लिखी है। उन्होंने कहा है कि, "हज़ार साल के बाद पहली बार किसी ने सौराष्ट्र-तमिल के इन रिश्तों के बारे में सोचा है, सौराष्ट्र से तमिलनाडु आकर के बसे हुए लोगों को पूछा है।" जयचंद्रन जी की बातें, हज़ारों तमिल भाई-बहनों की अभिव्यक्ति हैं।

साथियो, 'मन की बात' के श्रोताओं को मैं असम से जुड़ी हुई एक ख़बर के बारे में बताना चाहता हूँ। ये भी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मज़बूत करती है। आप सभी जानते हैं कि हम वीर लचित बोरफुकन जी की 400वीं जयन्ती मना रहे हैं। वीर लचित बोरफुकन ने अत्याचारी मुग़ल सल्तनत के हाथों से गुवाहाटी को आज़ाद करवाया था। आज देश, इस महान योद्धा के अदम्य साहस से परिचित हो रहा है। **कुछ दिन पहले लचित बोरफुकन के जीवन पर आधारित निबंध लेखन का एक अभियान चलाया गया था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इसके लिए करीब 45 लाख लोगों ने निबंध भेजे। आपको ये जानकर भी ख़ुशी होगी कि अब यह एक गिनीज़ रिकॉर्ड बन चुका है और सबसे बड़ी बात है और जो ज़्यादा प्रसन्नता की बात ये है कि वीर लचित बोरफुकन पर ये जो निबंध लिखे गए हैं, उसमें करीब-करीब 23 अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है और लोगों ने भेजा है। इनमें असमिया भाषा के अलावा, हिन्दी, अंग्रेजी, बाँग्ला, बोडो, नेपाली, संस्कृत, संथाली जैसी भाषाओं में लोगों ने निबंध भेजे हैं। मैं इस प्रयास का हिस्सा बने सभी लोगों की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, जब कश्मीर या श्रीनगर की बात होती है, तो सबसे पहले हमारे सामने, उसकी वादियाँ और डल झील की तस्वीर आती हैं। हम में से हर कोई डल झील के नज़ारों का लुत्फ़ उठाना चाहता है, लेकिन डल झील में एक और बात ख़ास है। डल झील अपने स्वादिष्ट लोटस स्ट्रीम–कमल के तनों या कमल ककड़ी के लिए भी जानी जाती है। कमल के तनों को देश में अलग-अलग जगह, अलग-अलग नाम से जानते हैं। कश्मीर में इन्हें नदरू कहते हैं। **कश्मीर के नदरू की डिमांड लगातार बढ़ रही है। इस डिमांड को देखते हुए**

डल झील में नदरू की खेती करने वाले किसानों ने एक FPO बनाया है। इस FPO में करीब 250 किसान शामिल हुए हैं। आज ये किसान अपने नदरू को विदेशों तक भेजने लगे हैं। अभी कुछ समय पहले ही इन किसानों ने दो खेप UAE भेजी हैं। ये सफलता कश्मीर का नाम तो कर ही रही है, साथ ही इससे सैकड़ों किसानों की आमदनी भी बढ़ी है।

साथियो, कश्मीर के लोगों का कृषि से ही जुड़ा हुआ ऐसा ही एक और प्रयास इन दिनों अपनी कामयाबी की ख़ुशबू फैला रहा है। आप सोच रहे होंगे कि मैं कामयाबी की ख़ुशबू क्यों बोल रहा हूँ, बात है ही ख़ुशबू की, सुगंध की ही तो बात है! दरअसल जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में एक कस्बा है 'भद्रवाह'। यहाँ के किसान दशकों से मक्के की पारम्परिक खेती करते आ रहे थे, लेकिन कुछ किसानों ने कुछ अलग करने की सोची। उन्होंने, फ्लोरीकल्चर, यानी फूलों की खेती का रुख किया। **आज यहाँ के करीब 25 सौ किसान (ढाई हज़ार किसान) लैवेंडर की खेती कर रहे हैं। इन्हें केंद्र सरकार के एरोमा मिशन से मदद भी मिली है। इस नई खेती ने किसानों की आमदनी में बड़ा इजाफ़ा किया है और आज लैवेंडर के साथ-साथ इनकी सफलता की ख़ुशबू भी दूर-दूर तक फैल रही है।**

साथियो, जब कश्मीर की बात हो, कमल की बात हो, फूल की बात हो, सुगंध की बात हो, तो कमल के फूल पर विराजमान रहने वाली माँ शारदा का स्मरण आना बहुत स्वाभाविक है। कुछ दिन पूर्व ही कुपवाड़ा में माँ शारदा के भव्य मन्दिर का लोकार्पण हुआ है। ये मन्दिर उसी मार्ग पर बना है, जहाँ से कभी शारदा पीठ के दर्शनों के लिए जाया करते थे। स्थानीय लोगों ने इस मन्दिर के निर्माण में बहुत मदद की है। मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों को इस शुभ कार्य के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार 'मन की बात' में बस इतना ही। अगली बार, आपसे 'मन की बात' के सौवें (100वें) एपिसोड में मुलाकात होगी। आप सभी, अपने सुझाव ज़रूर भेजिए। मार्च के इस महीने में हम होली से लेकर नवरात्रि तक, कई पर्व और त्योहारों में व्यस्त रहे हैं। रमजान का पवित्र महीना भी शुरू हो चुका है। अगले कुछ दिनों में श्री राम नवमी का महापर्व भी आने वाला है। इसके बाद महावीर जयंती, गुड फ्राइडे और इस्टर भी आएँगे। अप्रैल के महीने में हम भारत की दो महान विभूतियों की जयन्ती भी मनाते हैं। ये दो महापुरुष हैं – महात्मा ज्योतिबा फुले और बाबा साहब आम्बेडकर। इन दोनों ही महापुरुषों ने समाज में भेदभाव मिटाने के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया। आज आज़ादी के अमृतकाल में, हमें ऐसी महान विभूतियों से सीखने और निरंतर प्रेरणा लेने की ज़रूरत है। हमें अपने कर्त्तव्यों को सबसे आगे रखना है। साथियो, इस समय कुछ जगहों पर कोरोना भी बढ़ रहा है। इसलिए आप सभी को एहतियात बरतनी है, स्वच्छता का भी ध्यान रखना है। अगले महीने, 'मन की बात' के सौवें (100वें) एपिसोड में हम लोग फिर मिलेंगे, तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए। धन्यवाद। नमस्कार।

कामयाबी की ख़ुशबू बिखेरती जम्मू और कश्मीर की

बैंगनी क्रान्ति

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

अंगदान
जीवनदान का नेक कार्य

“इस आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के युग में अंगदान किसी का जीवन बचाने का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण साधन है। कहते हैं, जब एक व्यक्ति मृत्यु के बाद अपना शरीर दान करता है तो उससे 8 से 9 लोगों को एक नया जीवन मिलने की सम्भावना बनती है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

अंगदान जीवन बचाने का एक ऐसा नेक कार्य है, जो कई लोगों की ज़िन्दगी बदल सकता है। अंग प्रतिरोपण एक चिकित्सीय चमत्कार है, जिससे किसी को दूसरा जीवन मिल सकता है। यह नि:स्वार्थ सेवा का ऐसा कार्य है, जो किसी ज़रूरतमंद का जीवन बचा सकता है और परिजन की बीमारी या चोट के कारण हताश परिवार में आशा की किरण बन सकता है।

अंगों की कमी एक सार्वभौम समस्या है और एशिया तो इस मामले में शेष विश्व से कहीं पीछे है। भारत में, पिछले एक दशक में अंगदान में काफ़ी वृद्धि हुई है। 2013 में देश में पाँच हज़ार से कम अंगदान हुए थे, लेकिन 2022 में यह संख्या 15 हज़ार से अधिक रही।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत सरकार ने अंगदान और अंग प्रतिरोपण को बढ़ावा देने की कई पहल की हैं। राष्ट्रीय अंग प्रतिरोपण कार्यक्रम का उद्देश्य देश के ज़रूरतमंद नागरिकों का अंग प्रतिरोपण के माध्यम से जीवन बदलने के लिए मृतक के अंगदान किए जाने को बढ़ावा देना है। इस कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय ऑर्गन एंड टिशु ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइज़ेशन (NOTTO), रीजनल ऑर्गन एंड टिशु ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइज़ेशन (ROTTO) तथा स्टेट ऑर्गन एंड टिशु ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइज़ेशन (SOTTO) दान में मिले अंगों को सुरक्षित और कम-से-कम समय में लेकर, प्राप्तकर्ता तक पहुँचाने तक के काम का समन्वय करने में मदद करते हैं। अंगदान को आसान बनाने के उद्देश्य से NOTTO की वेबसाइट पर नागरिकों के लिए अपने अंगदान का संकल्प दर्ज कराने की सुविधा भी मौजूद है।

अंग प्रतिरोपण की प्रक्रिया तेज़ करने के लिए उपरोक्त संस्थागत तंत्र के साथ केंद्र सरकार ने देश में दान किए गए अंगों को अविलम्ब एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने के लिए परिवहन का एक अभिनव प्रयोग भी अपनाया है। 2014 में सरकार ने ग्रीन कॉरिडोर की अवधारणा पेश की, जो एम्बुलेंस के लिए ख़ाली कराया गया सीमांकित विशेष सड़क मार्ग है जो प्रतिरोपण के लिए प्राप्त अंगों को गंतव्य अस्पताल तक पहुँचने में सक्षम बनाता है।

“मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने अपने हालिया ‘मन की बात’ में अंगदान के बारे में बात की और देश भर के नागरिकों से आगे आने और अपने अंगदान करने का आग्रह किया।”

-आर. माधवन
अभिनेता

ऑर्गन प्लेज कैसे लें ?

1. NOTTO की वेबसाइट : www.notto.gov.in पर जाएँ और 'डोनर प्लेज' टैब पर क्लिक करें
2. अपनी आईडी बनाएँ
3. डिजिटल फ़ॉर्म भरें और जमा करें
4. स्वीकृति पर आपको एक ईमेल सूचना प्राप्त होगी
5. अपना डोनर कार्ड बनवाएँ

अंगदान और प्रतिरोपण के लिए सरकार की एक अन्य उल्लेखनीय पहल 'एक राष्ट्र, एक नीति' अपनाना है। इससे पहले अंग प्राप्त करने के इच्छुक केवल अपने अधिवास राज्य में ही पंजीकरण करा सकते थे, लेकिन अब बदले हुए नए नियमानुसार सभी भारतीय एक ही प्रतीक्षा सूची में अपना पंजीकरण करवा सकते हैं, चाहे वे किसी भी राज्य में रहते हों। नए दिशानिर्देशों में मृतक दाता के अंग प्राप्त करने के लिए पंजीकरण की पात्रता वाली 65 वर्ष की ऊपरी आयु सीमा भी हटा दी गई है। नए नियमों का उद्देश्य दान में प्राप्त अंगों तक बेहतर और अधिक न्यायसंगत पहुँच बनाना और शव दान को बढ़ावा देना है, जो फ़िलहाल भारत में किए जाने वाले सभी अंग प्रतिरोपण का एक छोटा-सा अंश है।

अंगदान से सम्बन्धित मिथक और भ्रान्तियाँ दूर करने और लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए NOTTO, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अन्य माध्यमों से सरकार विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती है। हाल में प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' सम्बोधन में इस विषय पर बात की। उन्होंने दो परिवारों के बारे में बताया, जिन्होंने अपने मृत प्रियजनों के अंगदान करके दूसरों को जीवन देने का विकल्प चुना।

अंगदान का समर्थन करते हुए सब मिलकर काम करें तो प्रत्येक भारतीय अनगिनत जीवन बचा कर एक बेहतर कल बना सकता है। अंगदान का संकल्प लेकर और उनका दान करके लोग दयालुता और उदारता की ऐसी विरासत छोड़ सकते हैं, जो हमारे अवसान के बाद भी लम्बे समय तक किसी दूसरे का जीवन बदल सकेगी।

"मैं आभारी हूँ कि प्रधानमंत्री ने हमारी बेटी की सराहना की, वे हमारे प्रति बहुत सहानुभूतिपूर्ण थे। उन्होंने कहा कि हमारी बेटी भारत का गौरव है। यह न केवल मेरे परिवार के लिए, बल्कि पंजाब के लिए भी गर्व का क्षण है कि भारत सरकार ने हमारी बेटी को भारत की सबसे कम उम्र की अंगदाता के रूप में मान्यता दी है।"

-सुखबीर सिंह
अबाबत कौर के पिता

डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी

कार्डिएक सर्जन और अध्यक्ष, नारायण हैल्थ, बेंगलुरु

अंगदान बचाए जान : जीवन का अनुपम उपहार

लगभग 25 वर्ष पूर्व मैंने कर्नाटक में पहला हृदय प्रतिरोपित किया था। तब से अब तक बहुत कुछ बदल चुका है, हमने प्रगति की है। अनेक लोग स्वेच्छा से अंगदान का संकल्प लिए आगे आ रहे हैं, लेकिन अभी भी लम्बा रास्ता तय करना है। हर वर्ष जितने अंग हमें दान में मिलते हैं, आवश्यकता उससे कहीं अधिक की है। हमें प्रति वर्ष कम-से-कम 5 लाख अंगों की आवश्यकता पड़ती है, जबकि फ़िलहाल केवल कुछ हज़ारों में अंग दान मिलते हैं। यह कमी तभी पूरी की जा सकती है, जब अधिक-से-अधिक लोग अंगदान के लिए सामने आएँ।

आँकड़े बताते हैं कि 2 लाख लोगों को कॉर्निया प्रतिरोपित किए जाने की आवश्कता है, लेकिन केवल 50,000 लोगों को ही यह मिल पाता है। हर वर्ष कम-से-कम 2 लाख गुर्दों की ज़रूरत होती है, लेकिन इसे केवल 1,600 लोग ही प्राप्त कर पाते हैं। इसी प्रकार हमें हर साल 50,000 हृदय प्रतिरोपण की आवश्यकता होती है, लेकिन केवल 339 लोगों को ही अंग मिल पाते हैं। यही हाल फेफड़े, यकृत जैसे अन्य अंगों का है। यह आँकड़े चिन्ताजनक हैं।

यह जानना बेहद ज़रूरी है कि एक मृत अंगदाता कम-से-कम आठ या नौ लोगों की जान बचा सकता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति के पास दो गुर्दे होते हैं, जो दो अलग-अलग व्यक्तियों में प्रतिरोपित किए जा सकते हैं, इसी प्रकार एक यकृत दो मरीज़ों में बाँटा जा सकता है। कई मरीज़ों को गुर्दे और यकृत जैसे अंग अभी अपने रिश्तेदारों से मिलते हैं, जबकि हृदय और फेफड़े के मामले में यह भी सम्भव नहीं है। इन्हें हम केवल मृत अंग दाता से ही ले सकते हैं।

यही नहीं, अंगदान को लेकर हमारे समाज में कई भ्रान्तियाँ भी हैं, जैसे कई लोग मानते हैं कि अगर अन्तिम संस्कार से पहले मृतक के शरीर से कोई अंग निकाल लिए गए तो मृत्योपरान्त उसे मुक्ति नहीं मिलेगी। यह भ्रान्तियाँ निराधार हैं। हाल में बेंगलुरु में एक बैठक हुई, जिसमें सभी धर्मों के आध्यात्मिक गुरु सम्मिलित हुए। यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी धर्मों के गुरुओं ने सर्वसम्मति से अंगदान का समर्थन किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि कोई भी धर्म अंगदान की मनाही नहीं करता।

हाल में सरकार के कुछ नीतिगत परिवर्तन भी अंगदान बढ़ाने में सहायक हुए हैं। पहले विदेशियों के लिए भारत में अंग प्रतिरोपित करवाना आसान था, लेकिन अब यह सुविधा पहले भारतीयों को दिए जाने का प्रावधान किया गया है। सरकार का यह एक बहुत ही सकारात्मक क़दम है।

सरकार ने एक संगठित ढाँचा बनाया है, जहाँ व्यक्ति अंग प्राप्त करने के लिए अपना नाम सूचीबद्ध करवा सकता है। अंगों का आवंटन एक सरकारी निकाय, बहुत ही पारदर्शी विधि से वरिष्ठता सूची के आधार पर करता है। हर कोई जान सकता है कि अगली बारी किस की होगी। इस तरह कोई भी अनुचित फायदा नहीं उठा सकता।

भारत के प्रधानमंत्री बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँच बनाने की कला जानते हैं और उन्होंने अक्सर अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में जटिल विषयों पर भी आम लोगों की भाषा में बात करके लाखों लोगों तक पहुँच बनाई है। हाल में उन्होंने अमृतसर की एक छोटी-सी बेटी का उल्लेख किया, जिसके माता-पिता ने उसकी मृत्यु के बाद उसके अंगदान कर दिए थे। प्रधानमंत्री ने अंगदान के लिए एक बड़ी ही भावुक अपील की, जिसका निःसन्देह बड़े पैमाने पर असर पड़ेगा।

यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है कि कई युवाओं के हृदय क्षतिग्रस्त हैं। ऐसी परिस्थिति में केवल वह युवा ही नहीं, उस पर निर्भर उसका परिवार भी कष्ट पाता है। मैंने पहली हृदय प्रतिरोपण सर्जरी करने से लेकर आज तक अपने 25 वर्षों के कार्यकाल में कितने ही लोगों को अंगदान मिलने के बाद सफल जीवन जीते देखा है, लेकिन अंगों की कमी होने के कारण हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं हो पाता। एक तरफ़ मरीज़ अंगदान मिलने की प्रतीक्षा में हैं और दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि हज़ारों लोगों को मृत्यु उपरान्त दफ़ना दिया जाता है या उनका दाह संस्कार कर दिया जाता है, जबकि उनके अंग न जाने कितने लोगों को जीवन दे सकते थे। यह कमी दूर करने का एक ही उपाय है कि डिजिटल मीडिया और मास मीडिया में इस बारे में निरन्तर चर्चा-परिचर्चा करके लोगों में जागरूकता लाई जाए। इस काम में धर्मगुरुओं को शामिल करना भी बहुत ज़रूरी है।

अंगदान के बारे में जागरूकता का प्रसार करना और लोगों को अंगदान के लिए प्रोत्साहित करना हमारा भी दायित्व बनता है। आज, कई प्रभावशाली युवा अंगदान के बारे में बात करके लोगों में समझ पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। इससे जागरूकता बढ़ी है।

यह नश्वर संसार सदा के लिए छोड़कर जाने वाला भी जीवन का अनुपम उपहार दे सकता है। अंगदान के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने और इस बारे में जागरूकता का प्रसार करने के लिए हम सबको मिलकर काम करना है। गेंद अब हमारे पाले में है। हमें देखना है कि हम अंगों की आवश्यकता और दान में मिले अंगों की संख्या के बीच का अन्तर कैसे पाट सकते हैं। आइए, किसी की जान बचाने के लिए मिल कर काम करें और उसे एक बार फिर से जीवन जीने का अवसर दें।

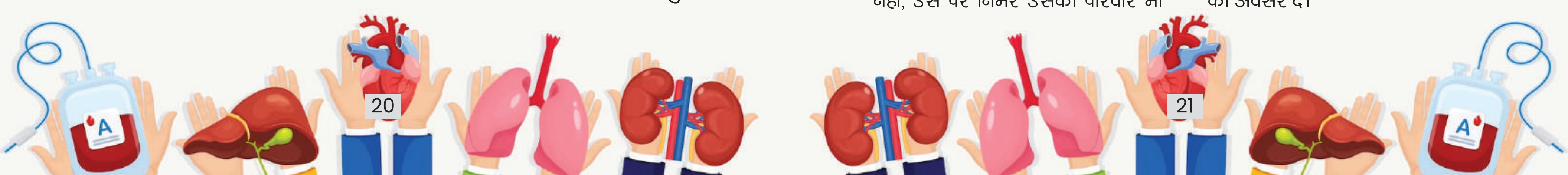

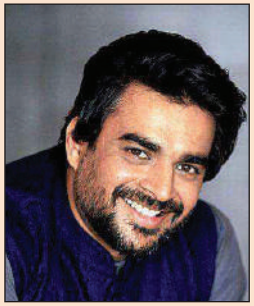

आर. माधवन
अभिनेता

अंगदान : समाज की निःस्वार्थ सेवा

हम हर दिन एक अधिक उन्नत वैश्विक समाज की ओर अग्रसर हैं। ऐसे में एक-दूसरे के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझना भी महत्त्वपूर्ण है। ऐसा ही एक उत्तरदायित्व है अंगदान, जिस पर गत कुछ वर्षों से अधिक ध्यान दिया जा रहा है। स्वयं मैंने दस वर्ष पूर्व अपने नेत्र दान का संकल्प लिया था। इसलिए इसके प्रभाव से भली-भाँति परिचित हूँ कि इसका क्या असर पड़ेगा?

जब मैंने अपने अंगदान करने का संकल्प लिया था, तब इसके बारे में जागरूकता कम और अंधविश्वास अधिक था, लेकिन मुझे तब भी विश्वास था और आज भी है कि यही सबसे निःस्वार्थ सेवा है। कई ऐसी संस्कृतियाँ और लोग हैं, जो अंगदान को लेकर शंकालु हैं, पर हमें समझना चाहिए कि संस्कृति और परम्पराएँ स्थिर नहीं होतीं, समय के साथ बदलती रहती हैं। मानव के रूप में हमने प्रौद्योगिक उन्नति की है, पर हमें अपनी सोच और क्रियाकलापों को भी उन्नत करना है। हमें संस्कृति और धार्मिक आस्थाओं से परे सोचना है कि हम अपने समाज की निःस्वार्थ सेवा कैसे कर सकते हैं?

मैंने अपनी एक वेब-सीरीज़ 'ब्रीद' में काम करते समय अंगदान की महिमा देखी। इस वेब-सीरीज़ में मैंने एक ऐसे पिता की भूमिका निभाई है, जिसके पुत्र को अपना फेफड़ा प्रतिरोपण किए जाने का इन्तज़ार है। आप ऐसे परिवारों का दुख महसूस कर सकते हैं जो अंगदान का इंतज़ार कर रहे हैं। जब वे सुनते हैं कि किसी ने अपना अंगदान किया है और वे अंग मिलने वालों की पंक्ति में अगले हैं, तो वे ख़ुशी और आशा से भर जाते हैं। सफल ट्रांसप्लांट के बाद, लोगों का समाज के लिए सफल योगदानकर्ता बनने की भी कई अद्भुत कहानियाँ हैं।

मैंने जब अंगदान करने का संकल्प लिया तो मेरा परिवार इससे सहमत था और हमने इसका प्रचार किया। मुझे यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं लगता, यह तो दूसरों की मदद करने का एक उपाय भर है। मेरे विचार में महत्त्वपूर्ण तो यह है कि लोग समझें कि उनके अंगदान से किसी को नया जीवन मिल सकता है। मौत से जूझता कोई व्यक्ति फिर से नया जीवन पा सकता है।

विश्व के अनेक देश अंगदान को अनिवार्य बना रहे हैं और भारत को भी पीछे नहीं रहना चाहिए। सिंगापुर में हर नागरिक को अंगदाता माना जाता है, भले ही इसके लिए उनका पंजीकरण हो या न हो। मृतक यदि अंगदान का संकल्प कर चुका हो तो परिवार की आपत्ति मृतक के अंग निकालने से नहीं रोक सकती। ऐसे उपाय करके अधिक-से-अधिक लोगों को अंगदान के लिए प्रेरित किया जा सकता है कि वे अंगदान का संकल्प लें और समय रहते अनेक लोगों को नई ज़िंदगी दें।

मुझे ख़ुशी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के नवीनतम सम्बोधन में अंगदान का उल्लेख किया और देश भर के नागरिकों को आगे आ कर अंगदान करने की प्रेरणा दी। यह ज़रूरी है कि ऐसे नेक कार्य के लिए सरकार गम्भीरता से प्रोत्साहित करे। मुझे विश्वास है कि भारत आज जो कर रहा है, उससे वह विश्व भर के लिए अनुकरणीय उदाहरण बन चुका है।

मैं युवाओं और नागरिकों को बताना चाहता हूँ कि कई जीवन बचाने और किसी के जीवन में आशा की किरण जगाने के लिए अंगदान एक छोटा सा प्रयास भर है। यह एक नेक कार्य है, जिस पर हम सब को विचार करना चाहिए और यदि हम किसी के जीवन में एक छोटा-सा परिवर्तन भी ला सकें तो अवश्य लाना चाहिए। अंगदान एक निःस्वार्थ सेवा है, जिसका किसी की ज़िंदगी पर बहुत बड़ा असर पड़ सकता है। हम सब को अंगदान का संकल्प लेकर उनकी मदद करनी चाहिए, जिन्हें इनकी ज़रूरत है। हमें एक-दूसरे के प्रति अपने उत्तरादायित्वों का अहसास रहना चाहिए और दुनिया को रहने की एक बेहतर जगह बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

आर. माधवन का साक्षात्कार सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

अंगदान के लिए देश की प्रेरणास्रोत स्नेहलता चौधरी

अंगदान करने के पीछे सबसे बड़ी भावना दुनिया छोड़ने के बाद भी किसी की जान बचाने का अहसास है। अंगों का इन्तज़ार करने वाले लोग जानते हैं कि जब तक कोई अंग या शवदाता नहीं मिल जाता, तब तक एक-एक पल गुज़ारना कितना मुश्किल होता है। ऐसे में अंगदाता मरीज़ों के लिए किसी भगवान से कम नहीं है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने झारखंड की निवासी स्नेहलता चौधरी के बारे में बात की, जिनके दिल, गुर्दा और जिग़र दान से कई लोगों की जान बची।

*दूरदर्शन की टीम ने **स्नेहलता चौधरी** के बेटे अभिजीत चौधरी से उनके परिवार के इस प्रेरणादायी फैसले के बारे में और जानने के लिए बात की।*

"मेरी माँ सामाजिक गतिविधियों में अत्यधिक शामिल रहती थीं और यही कारण था कि उनके जाने के बाद हमने उनके अंगों को दान करने का निर्णय लिया। वह भी यही चाहती थीं। जब हम उनके अंगों को दान करने का फैसला कर रहे थे तो कई तरह के मिथक हमारे सामने आए। मिथक, जैसे कि उन्हें मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी, लेकिन हमने अपनी सारी भावनाओं को एक तरफ़ रख कर सोचा कि अगर हम उनके अंगदान नहीं करेंगे, तो वे अंततः जल जाएँगे; बल्कि उन्हें दान करके हम कई लोगों की जान बचाने में सफल रहे। हमने उनका दिल, किडनी और जिग़र दान किया। ग़ाज़ियाबाद के रहने वाले 14 साल के बच्चे में हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया है। भले ही हम उन लोगों को नहीं जानते, जिन्हें माँ के अंग दिए गए, लेकिन हम यह जानते हैं कि वह किसी-न-किसी रूप में कहीं आज भी जीवित हैं।

एक दिन मैं प्रधानमंत्री से बात कर सकूँ, यह मेरा सपना था और आज मेरी माँ के आशीर्वाद से यह सम्भव हो सका।

मेरा मानना है कि अंगदान केवल एक कार्य नहीं है, यह एक विचार है, जो नए भारत के विचार से मेल खाता है। हमारे देश के युवाओं को यह जानने की ज़रूरत है कि इसके जैसा नेक और योग्य कोई दूसरा दान नहीं है।"

स्नेहलता चौधरी द्वारा किए गए अंगदान के बारे में अधिक जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

जीवन का उपहार – अबाबत कौर की प्रेरक कहानी

हममें से बहुत से लोग जितना समझते हैं, अंगदान उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। भारत में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो सुखी जीवन जीने की उम्मीद में अंगों का इंतज़ार कर रहे हैं। अंतिम चरण के अंग विफलता वाले कुछ लोगों के लिए, यह वास्तव में जीवन और मृत्यु का मामला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत में अंगदान के महत्त्व के बारे में विस्तार से बात की। इस नेक काम पर प्रकाश डालने के लिए, उन्होंने पंजाब के अमृतसर से **सुखबीर सिंह** और **सुप्रीत कौर** से बात की। सुखबीर और सुप्रीत ने अपनी दिवंगत **बेटी अबाबत कौर** की किडनी डोनेट की है। इस प्रेरक निर्णय को लेकर अबाबत के माता-पिता ने न केवल किसी की जान बचाई, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि उनकी बेटी इस दुनिया से जाने के बाद भी किसी-न-किसी रूप में जीवित रहे।

दूरदर्शन की टीम ने अबाबत के माता-पिता से बात की।

सुखबीर सिंह ने कहा, "मनुष्य पंचतत्व से बना है, आत्मा के जाने के बाद शरीर मिट्टी के सिवा और कुछ नहीं है। मेरा मानना है कि अगर हम अपने अंगों को किसी ज़रूरतमंद को दान करने का निर्णय लेते हैं, तो हम न केवल उनके जीवन में एक नया उत्साह भर सकते हैं और उन्हें आशा की एक नई किरण दे सकते हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारा कुछ हिस्सा हमारी मृत्यु के बाद भी जीवित रहे। आपको जानकर हैरानी होगी कि अंगों का इंतज़ार करने वालों की लिस्ट बहुत लम्बी है। यदि हम सब अंगदान करने का निर्णय लेते हैं, तो हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे प्रियजन किसी रूप में जीवित रहें। इससे न केवल हमें ख़ुशी मिलेगी, बल्कि किसी ज़रूरतमंद की जान बचाने का गर्व भी महसूस होगा।"

अबाबत की माँ सुप्रीत ने प्रधानमंत्री के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहा, "यह गर्व की बात है कि हम प्रधानमंत्री से बात कर सके। उन्होंने हमसे बहुत उदारता से बात की।" सुखबीर ने कहा, "मैं आभारी हूँ कि प्रधानमंत्री ने हमारी बेटी की सराहना की, वे हमारे प्रति बहुत सहानुभूतिपूर्ण थे। उन्होंने कहा कि हमारी बेटी भारत का गौरव है। यह न केवल मेरे परिवार के लिए, बल्कि पंजाब के लिए भी गर्व का क्षण है कि भारत सरकार ने हमारी बेटी को भारत की सबसे कम उम्र की अंगदाता के रूप में मान्यता दी है।"

सुखबीर सिंह, सुप्रीत कौर और अबाबत कौर की कहानी दुनिया भर में सभी के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा है। उनके निःस्वार्थ कार्य ने दिखाया है कि हम सभी अंगदान कर किसी ज़रूरतमंद के जीवन रक्षक बन सकते हैं।

नारी शक्ति

महिलाओं के विकास से महिलाओं द्वारा विकास तक

“आज भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। नारी शक्ति की ये ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“मुझे इस बात की ख़ुशी और सम्मान है कि प्रधानमंत्री ने ‘मन की बात’ कार्यक्रम में मेरे नाम का उल्लेख किया, जो देश के कोने-कोने तक पहुँचता है। इस सराहना ने मुझे और अधिक मेहनत करने और अपने संस्थान और अपने देश की प्रगति में योगदान करने के लिए प्रेरित किया है। मुझे विश्वास है कि हमारे प्रधानमंत्री का महिला सशक्तीकरण पर विशेष ज़ोर, सभी क्षेत्रों की अनेक महिलाओं को अग्रणी होने के लिए प्रेरित करेगा।”

-डॉ. ज्योतिर्मयी मोहंती
वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई

भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के अवसर पर प्रधानमंत्री ने अमृतकाल में एक महत्त्वपूर्ण विज़न सामने रखा, जिसमें देश की सामाजिक-आर्थिक विकास यात्रा में नारी शक्ति की अहम भूमिका होगी।

‘नारी’ और ‘शक्ति’, हिन्दी के इन दो शब्दों में देश की महिलाओं की ताक़त और सम्भावनाओं को पहचाना गया है, जिससे वे अपने सपने और आकांक्षाएँ पूरी करती हैं। प्रधानमंत्री प्रायः एक वाक्य कहते हैं, “महिलाएँ केवल हमारी माताएँ, बहनें और बेटियाँ ही नहीं, हमारे समाज की असली शिल्पकार भी हैं।” उन्हें सशक्त करना और सृजनात्मक समाज बनाना, आज देश के लिए नितान्त आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति और शास्त्रों में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त है, जैसे केन उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि देवी उमा ने ही तीन शक्तिशाली देवताओं- इन्द्र, वायु और अग्नि को ब्रह्मतत्व का गूढ़ ज्ञान दिया था। आज के आधुनिक समाज में भी महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और नारी शक्ति का सही परिचय देती हुई समाज पर गहरा प्रभाव डाल रही हैं, जिसे देख राष्ट्र का सीना गर्व से फूल उठता है।

किसी भी देश की प्रगति का आकलन हर क्षेत्र और वर्ग में उसकी महिलाओं का सशक्तीकरण देख कर किया जा सकता है। सरकार की ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ योजना के तहत कन्या भ्रूण हत्या रोकने और लड़कियों की शिक्षा पर बल तथा प्रधानमंत्री ‘उज्ज्वला योजना’ के तहत निर्धनता रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारों को एलपीजी कनेक्शन देकर भोजन पकाने के काम में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक लकड़ी का उपयोग कम करने को बढ़ावा दिया गया। इसी प्रकार महिला ई-हॉट, महिला उद्यमियों को अपने उत्पाद प्रदर्शित करके बिक्री करने में सक्षम करता है। सरकार सभी महिलाओं को सशक्त करने के लिए प्रयासरत है, चाहे ग्रामीण महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना हो, या कामकाजी शहरी महिलाओं को मातृत्व लाभ देना हो। इसके अलावा सरकार राजनीति में और निर्णय लेने वाले पदों पर भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा रही है।

विश्व आर्थिक मंच की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2021 के अनुसार भारत ने समग्र लिंग अन्तर सूचकांक रैंकिंग में 28 स्थान का सुधार किया है। महिलाओं में साक्षरता दर 2001 के दौरान 65.46 प्रतिशत से बढ़कर 2021 में 77.65 प्रतिशत हुई। साक्षरता में लिंग अन्तर 2001 के 21.7 प्रतिशत से घटकर 2021 में 14.4 प्रतिशत रह गया। यह प्रगति, महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न सरकारी पहलों का परिणाम है।

‘मन की बात’ के हाल के सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत में परिवर्तन लाने वाली महिलाओं का बड़ा ही उत्साहजनक वर्णन करते हुए भारतीय समाज में महिलाओं के महती योगदान की चर्चा की।

वन्दे भारत रेलगाड़ी चलाने वाली एशिया की पहली लोको-पायलट सुरेखा यादव से लेकर वायुसेना की कॉम्बैट यूनिट की कमान सम्भालने वाली वायुसेना अधिकारी ग्रुप कैप्टन शालीजा धामी और सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला सेना अधिकारी कैप्टन शिवा चौहान तक; फ़िल्म प्रोड्यूसर

गुनीत मोंगा और निर्देशक कार्तिकी गोंज़ाल्विस को उनके वृत्तचित्र के लिए मिले ऑस्कर पुरस्कार से लेकर डॉ. ज्योतिर्मयी मोहंती को रसायन शास्त्र और रासायनिक इंजीनियरिंग के लिए दिए गए IUPAC का विशेष पुरस्कार तक; भारत की अण्डर-19 क्रिकेट टीम के टी-20 वर्ल्ड कप में रचे इतिहास से लेकर

> “प्रधानमंत्री की ‘मन की बात’ में भारत की कुछ सबसे प्रेरक महिलाओं के साथ मेरे नाम के उल्लेख ने मेरे दिल को गर्व और कृतज्ञता से भर दिया है। मैं सम्मानित और अभिभूत महसूस कर रही हूँ कि इतने ऊँचे पद के व्यक्ति ने मेरी उपलब्धि और मेरी 34 साल की कड़ी मेहनत को देश के सामने रखा है।”
>
> **-सुरेखा यादव**
> एशिया की पहली महिला लोको पायलट

नगालैंड में बनी पहली महिला मंत्री सुश्री सलहौतुओनुओ क्रूसे तक भारतीय महिलाओं ने कामयाबी की नई इबारत लिखी हैं।

आज के समय में महिलाओं का उत्थान सर्वोपरि है, क्योंकि नारी शक्ति निश्चित रूप से भारत के विकास और वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। महिलाओं के आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक उत्थान में बहुत प्रगति हुई है, लेकिन अब इस शक्ति को उचित तरीके से आगे बढ़ाने का वक्त है, जिससे अधिक-से-अधिक महिलाएँ विकास कार्यों में आगे आएँ और एक ऐसे समाज की रचना करें, जो भौगोलिक, सामाजिक, शैक्षिक और आयु के स्तर पर अधिक समावेशी, अधिक सशक्त हो। आख़िरकार नारी शक्ति की ऊर्जा एक नए, विकसित भारत के लिए वास्तव में प्राणवायु है।

बाधाओं को तोड़
बेहतर जीवन के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण

तब	अब
महिलाएँ लम्बी दूरी तय करके झीलों, तालाबों या बोरवेल तक जाती थीं और भारी मात्रा में पानी लेकर वापस आती थीं।	जल जीवन मिशन के तहत 8 करोड़ नल से जल कनेक्शन वरदान के रूप में आए।
महिलाएँ लकड़ी के चूल्हे से निकलने वाले धुएँ में साँस लेती थीं। वे खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी लेने निकलती थीं।	उज्ज्वला योजना के 9 करोड़ एलपीजी कनेक्शन ने महिलाओं को साँस की बीमारियों से मुक्त किया।
मिट्टी के तेल के दीयों ने गरीब परिवारों के लोगों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों के श्वसन, स्वास्थ्य और आँखों की रोशनी को नुकसान पहुँचाया।	2.6 करोड़ सौभाग्य बिजली कनेक्शनों ने मिट्टी के तेल के दीयों को अतीत की बात बना दिया है।
महिलाओं को अपने स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान को खतरे में डालकर शौच के लिए सुनसान जगहों पर जाना पड़ता था।	स्वच्छ भारत के तहत बने 11 करोड़ शौचालयों ने इन चिंताओं को दूर कर दिया है।

कैप्टन शिवा चौहान
सियाचिन में तैनात पहली महिला अधिकारी

चुनौतियाँ और सम्मान : भारतीय सेना में एक महिला के रूप में मेरा अनुभव

भारतीय सेना में मेरा अनुभव एक रोमांचक, चुनौतीपूर्ण और सन्तुष्टिदायक यात्रा की तरह रहा है। सेना शारीरिक फिटनेस और मानसिक कुशाग्रता के साथ-साथ नेतृत्व गुणों की माँग करती है, खासकर सियाचिन जैसे कठिन परिचालन क्षेत्र में सेवा करते समय। सेना हमें किसी भी भूमिका और स्थिति के लिए तैयार करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करती है।

मुझे अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी में और अन्य प्रशिक्षण गतिविधियों के दौरान पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, जिससे मुझे विभिन्न परिचालन भूमिकाओं और इलाकों में प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करने की अपनी क्षमताओं में विश्वास विकसित करने में मदद मिली। प्रशिक्षण ने मुझे आगे बढ़कर नेतृत्व करना और सैनिकों के लिए एक रोल मॉडल बनना सिखाया। इसने मुझे अतिरिक्त प्रयास करने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

जब मुझे सियाचिन में तैनाती के लिए चुना गया था, तो मुझे गर्व और खुशी महसूस हुई, लेकिन इसके साथ आने वाली बड़ी ज़िम्मेदारी के बारे में भी जानती थी। मैंने खुद को इलाके और परिचालन पहलुओं से परिचित कराया और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस चुनौतीपूर्ण कार्य के लिए शारीरिक और मानसिक तैयारी महत्त्वपूर्ण थी और बैटल स्कूल में कठिन-से-कठिन प्रशिक्षण ने मुझे आगे के कार्य के लिए तैयार किया।

सियाचिन ग्लेशियर कई चुनौतियों को प्रस्तुत करता है, जिसमें गम्भीर ठंड का मौसम, सब-ज़ीरो तापमान, दरारें, बर्फ के मस्तूल, ओवरहैंग्स, टैक्सिंग मर्रेंस, उच्च गति वाली हवाएँ और अलगाव की भावना शामिल हैं। हालाँकि, एक सेना अधिकारी के रूप में मेरी अदम्य इच्छाशक्ति और मेरी क्षमताओं में दृढ़ विश्वास ने मुझे हर बाधा को पार करने में सक्षम बनाया है। मानसिक मज़बूती यहाँ काम करने की कुंजी है और मेरी टुकड़ी के समर्थन और सकारात्मक रवैये ने मुझे एक लीडर के रूप में और अधिक ज़िम्मेदार बना दिया है।

सियाचिन ग्लेशियर में मेरी ऑपरेशनल ड्यूटी ने मुझे सिखाया है कि कैसे सबसे कठिन चुनौतियों का सामना एक मुस्कान के साथ किया जाए और किसी भी कठिन परिस्थिति में आसानी से कैसे बचा जाए। भारतीय सेना में जीवन किसी भी अन्य पेशे से अलग है, क्योंकि यह नेतृत्व, शारीरिक शक्ति, साहस, मानसिक दृढ़ता और ज़िम्मेदारी की भावना के लिए बेजोड़ अवसर प्रदान करता है। यह एक ही समय में हमें सशक्त और विनम्र बनाता है। मैं अधिक-से-अधिक महिलाओं को सेना को अपने पेशे के रूप में चुनने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

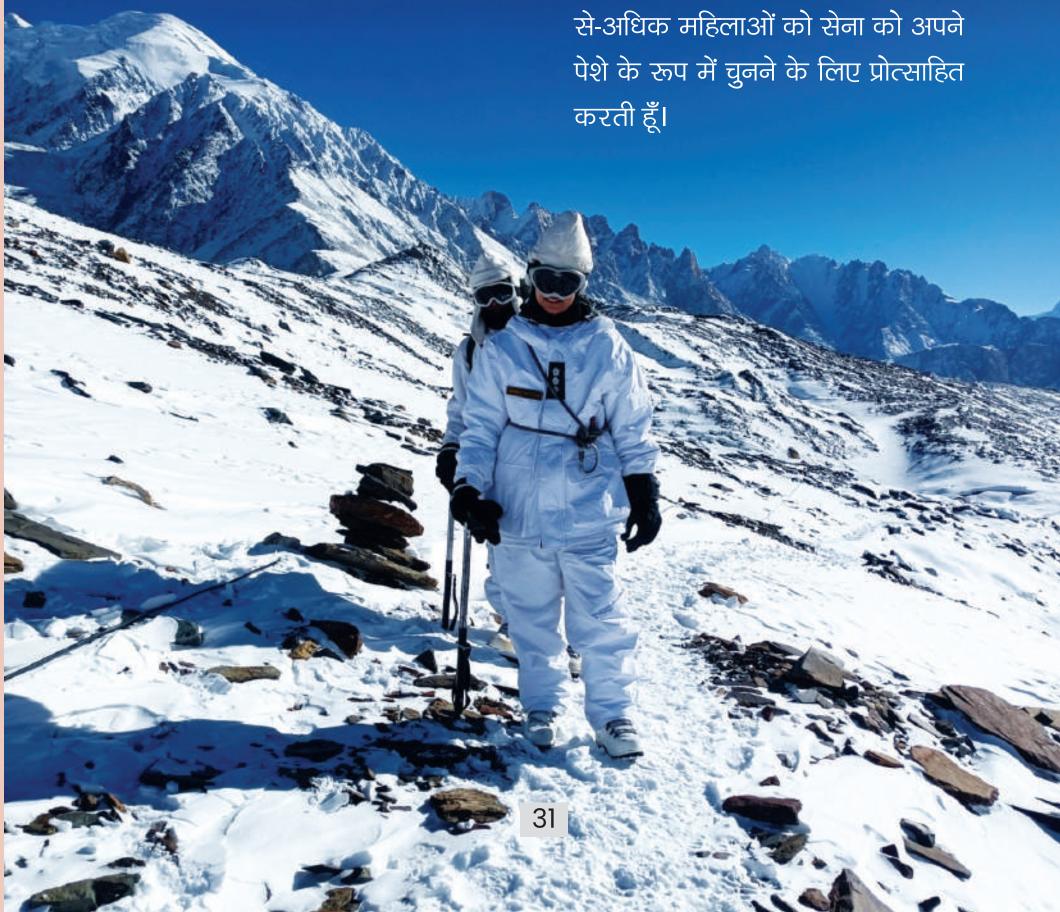

सलहौतुओनुओ क्रूसे
मंत्री, नगालैंड

नगालैंड ने रचा इतिहास

दूरदर्शन को दी एक भेंटवार्ता में श्रीमती क्रूसे ने विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की केन्द्रीय भूमिका पर अपने विचार प्रकट किए।

सलहौतुओनुओ क्रूसे ने नगालैंड की पहली महिला मंत्री बनकर इतिहास रचा है। राज्य में 2023 के चुनाव में नगालैंड विधानसभा की विधायक निर्वाचित होने के बाद उन्हें महिला संसाधन विकास एवं बागवानी मंत्री पद की शपथ दिलाई गई और इसके साथ ही नगालैंड के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। कोहिमा में किरुफेमा की रहने वाली क्रूसे, आठवीं पश्चिमी अंगामी विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं।

उन्होंने नगालैंड की पहली मंत्री नियुक्त किए जाने पर आभार व्यक्त करते हुए राजनीति में लिंग, समानता और समावेशन के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, "देश के विकास में महिला और पुरुष, दोनों का अपनी-अपनी अनूठी योग्यता के साथ मिलकर काम करना आवश्यक है।" श्रीमती क्रूसे ने बाल-लिंग अनुपात में सुधार और लड़कियों की शिक्षा सहित जीवन के सभी पहलुओं में नारी शक्ति को बढ़ावा देने वाली योजनाओं और प्रावधानों के लिए सरकार की सराहना की।

राज्य की पहली महिला मंत्री के रूप में नगालैंड में नारी शक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए श्रीमती क्रूसे की अपनी एक दृष्टि है। "महिलाओं का कौशल विकास, शिक्षा, उनके बड़े और छोटे स्तर के उपक्रमों को बढ़ावा मिलना चाहिए और आत्मनिर्भरता के लिए रोज़गार पैदा करने की ओर कदम बढ़ाने चाहिए। उद्देश्य यह है कि महिलाएँ सरकार की नीतियों और योजनाओं का लाभ उठा सकें और सशक्त और स्वावलम्बी बनें।" 'सशक्त महिला, सशक्त राष्ट्र' के अपने आदर्श वाक्य के साथ वे अधिक-से-अधिक महिलाओं को नारी शक्ति की ध्वजवाहिका के रूप में सामने आकर हर क्षेत्र की बाधाएँ पार करने के लिए प्रेरित करने को कृतसंकल्प हैं।

हर महिला के लिए क्रूसे का यही सन्देश है, "अपने जोश, जुनून, बहादुरी, संकल्प और कड़े परिश्रम में विश्वास रखें। महिलाएँ अपने आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प से हर सपना साकार कर सकती हैं।"

क्रूसे का नगालैंड की पहली मंत्री नियुक्त होना, राजनीति में महिलाओं के लिए एक अहम मील का पत्थर है। अपने राज्य की महिलाओं के सशक्तीकरण और उत्थान के लिए उनकी दृष्टि प्रेरणादायी है और उनकी यह यात्रा अधिक-से-अधिक महिलाओं को उनका अनुसरण करने की राह दिखाएगी।

एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव

सुरेखा यादव ने एशिया की पहली महिला लोको पायलट बनकर इतिहास रच दिया है। लैंगिक रूढ़ियों, कई चुनौतियों का सामना करते हुए सुरेखा ने पुरुष-प्रधान क्षेत्र में महिलाओं के लिए सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है। उनकी कड़ी मेहनत, उपलब्धियों और उनके काम के प्रति जुनून ने महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। वह युवा लड़कियों और महिलाओं के लिए रोल मॉडल बन गई हैं, जो लैंगिक रूढ़िवादिता को तोड़ने और अपना रास्ता बनाने की इच्छा रखती हैं।

सुरेखा यादव की यात्रा वास्तव में प्रेरणादायक है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में उनका उल्लेख करते हुए उन्हें भारत की महिलाओं के लिए एक प्रेरणा बताया।

दूरदर्शन के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने इस सम्मान को प्राप्त करने के लिए आभार व्यक्त किया।

"प्रधानमंत्री की 'मन की बात' में भारत की कुछ सबसे प्रेरक महिलाओं के साथ मेरे नाम के उल्लेख ने मेरे दिल को गर्व और कृतज्ञता से भर दिया है। मैं सम्मानित और अभिभूत महसूस कर रही हूँ कि इतने ऊँचे पद के व्यक्ति ने मेरी उपलब्धि और मेरी 34 साल की कड़ी मेहनत को देश के सामने रखा है। इस क्षेत्र में अपना पहला कदम रखने का अवसर देने के लिए मैं भारतीय रेल का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। अपनी 34 साल की सेवा में, मैं पहली महिला मालगाड़ी चालक, पहली महिला डीज़ल इंजन चालक और प्रतिष्ठित वंदे भारत एक्सप्रेस चलाने वाली पहली महिला लोको पायलट बनी हूँ और यह मेरे लिए किसी राष्ट्रीय पुरस्कार से कम नहीं है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरी उपलब्धियाँ महिलाओं को अपरम्परागत नौकरियाँ करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं।"

सुरेखा यादव का अपने काम के प्रति संकल्प, दृढ़ता और जुनून अभूतपूर्व रहा है, जिसने उन्हें एक अपरम्परागत क्षेत्र में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने में सक्षम बनाया है।

एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव का इंटरव्यू देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

वैश्विक पटल पर उभरती भारत की नारी शक्ति

निर्माता **गुनीत मोंगा** और निर्देशक **कार्तिकी गोंज़ाल्विस** की डॉक्यूमेंट्री 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' को हाल के ऑस्कर में बेस्ट डॉक्यूमेंट्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह जीत भारत के लिए बेहद गर्व की बात है। यह भारत में महिलाओं की विशाल प्रतिभा और रचनात्मकता और विश्व मंच पर उनके सकारात्मक प्रभाव का एक शक्तिशाली अनुस्मारक है। इस तरह के एक प्रतिष्ठित मंच पर उनके काम की मान्यता भारतीय फ़िल्म उद्योग में महिलाओं के बढ़ते प्रभाव को उजागर करती है और भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान की साक्षी है।

सफलता की यह कहानी नारी शक्ति की अभिव्यक्ति भी है, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। महिलाओं की क्षमता का प्रदर्शन करके, इसमें लाखों भारतीय लड़कियों और महिलाओं को प्रेरित करने, उन्हें अपने सपनों को आगे बढ़ाने और सितारों तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित करने की शक्ति है।

पूरे देश के साथ उनकी जीत का जश्न मनाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में उनकी उपलब्धियों का उल्लेख किया, जिससे हर भारतीय का दिल गर्व से भर गया।

गुनीत मोंगा ने देश के प्रधानमंत्री के इस सम्मान और देश से मिले प्यार के लिए दिल से आभार व्यक्त करते हुए दूरदर्शन की टीम के साथ एक साक्षात्कार कहा, "'मन की बात' एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मंच है। इस मंच के माध्यम से हमें प्रोत्साहित करने और हमारे ऑस्कर पर चर्चा करने के लिए हम प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हैं। पूरे देश से हमें जो प्यार और समर्थन मिला है, वह अपार है। अब हम इस अभिनव मंच की 100वीं कड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं और प्रार्थना करते हैं कि हम और ऑस्कर घर लाएँ और अपने देश को गौरवान्वित करें!"

मोंगा और गोंज़ाल्विस की जीत दर्शाती है कि भारत में महिलाएँ बाधाओं को तोड़ सकती हैं और कड़ी मेहनत और दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती हैं। भारत एक उज्ज्वल भविष्य की आशा कर सकता है, जहाँ महिलाएँ एक मुख्य भूमिका निभाने के लिए सशक्त हों, जहाँ उनके योगदान का जश्न मनाया जाता हो, जैसा कि मोंगा और गोंज़ाल्विस के साथ हुआ है।

भारत की सौर ऊर्जा क्रान्ति

एक सतत भविष्य का निर्माण

> सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व सफलता की आज पूरा विश्व सराहना कर रहा है।
>
> -प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भारत का क्षेत्रफल 32 लाख वर्ग किलोमीटर से अधिक है और यहाँ सौर ऊर्जा की विशाल क्षमता है। भारत के अधिकांश क्षेत्रों में प्रति वर्ग मीटर प्रति दिन 4-7 kWh प्राप्त होती है। पिछले कुछ वर्षों में सौर ऊर्जा ने भारत के ऊर्जा परिदृश्य में प्रत्यक्ष परिवर्तन किया है। सरकार की सौर ऊर्जा की ओर केंद्रित नीतियों, पहलों और नागरिकों के भारी समर्थन के कारण आज देश के शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने में मदद मिल रही है।

सौर ऊर्जा में भारत की प्रकाशमान स्थिति :

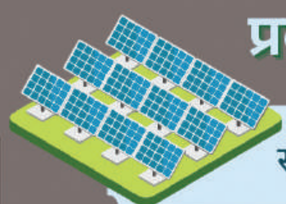

सौर ऊर्जा क्षमता में **चौथा स्थान**

पिछले 9 वर्षों में स्थापित क्षमता में **24.4 गुणा वृद्धि**

नई सौर फोटोवोल्टिक (पीवी) क्षमता के लिए दुनिया का **तीसरा सबसे बड़ा बाज़ार**

सरकार की पहलें

रूफटॉप सोलर पैनल लगाने की सरलीकृत प्रक्रिया : आवासीय उपभोक्ताओं को राष्ट्रीय पोर्टल www.solarrooftop.gov.in के माध्यम से रूफटॉप सोलर पैनल लगाने के लिए आसानी से आवेदन करने की अनुमति देना ।

PM-KUSUM योजना : ग्रिड से जुड़े सौर पम्पों की स्थापना, खेतों के सौरकरण और विकेंद्रीकृत छोटे सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना को बढ़ावा देना ।

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम योजना : सरकारी उपयोग में पर्यावरण वहनीयता और राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए देश में निर्मित सेल और मॉड्यूल का उपयोग कर सौर पीवी परियोजनाएँ स्थापित करना।

सौर पार्क और अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाएँ : मार्च, 2024 तक 40GW क्षमता के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए 'सौर पार्क और अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाओं के विकास' की एक योजना लागू की जा रही है।

आत्मनिर्भर भारत : सोलर पीवी के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए आत्मनिर्भर भारत के तहत 24,000 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ एक पीएलआई योजना शुरू की गई।

सूर्यमित्र कौशल विकास कार्यक्रम : सौर पीवी उद्योगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुशल और रोज़गार योग्य कार्यबल (सूर्यमित्र) विकसित करना।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अक्सर ज़मीनी स्तर पर लोगों के व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों की प्रेरक कहानियों को उजागर करने के साथ-साथ सौर ऊर्जा क्षेत्र में भारत की सफलता को साझा करने के लिए एक मंच के रूप में अपने 'मन की बात' कार्यक्रम का उपयोग करते हैं। 'मन की बात' के हालिया एपिसोड के दौरान उन्होंने केंद्रशासित प्रदेश, दीव के लोगों द्वारा किए गए काम और MSR-ऑलिव हाउसिंग सोसायटी, पुणे के प्रयासों पर प्रकाश डाला। सरकार और नागरिकों के ऐसे सामूहिक प्रयासों से भारत अमृतकाल के युग में एक सतत भविष्य प्राप्त करने के लिए तैयार है।

स्वच्छ और हरित भारत के लिए सामूहिक प्रयास का उदाहरण है दीव

दिन के समय पूरी तरह से सौर ऊर्जा पर चलने वाले भारत के पहले शहर दीव ने एक उदाहरण पेश किया है कि कैसे सरकार के समर्पित प्रयास, लोगों की समर्पित भागीदारी के साथ मिलकर चमत्कार कर सकते हैं।

'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने दीव के सफलता मंत्र का उल्लेख 'सबका प्रयास' के रूप में किया। कभी इस क्षेत्र में बिजली उत्पादन के संसाधन एक चुनौती थे, लेकिन जब से लोगों ने इस चुनौती के समाधान के लिए सौर ऊर्जा को चुना, जगह-जगह सोलर पैनल लगने लगे। आज बंजर भूमि, इमारतों की छतों, सभी में सौर पैनल हैं, जो शहर की बिजली की माँग को पूरा करने में मदद करते हैं।

*दूरदर्शन की टीम ने इस पहल के बारे में अधिक जानने के लिए श्रीमती **हेमलताबाई रमा**, अध्यक्ष, नगर परिषद, दीव से बात की।*

"दीव एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जहाँ हर साल लाखों लोग घूमने आते हैं। यहाँ के अधिकांश लोग अपनी आजीविका के लिए होटल व्यवसाय पर निर्भर हैं, जिससे हमारी ऊर्जा की माँग बढ़ जाती है। इन्हीं माँगों को पूरा करने के लिए हमारे प्रशासक श्री प्रफुल्ल पटेल ने शहर में सोलर पैनल लगवाए, जिससे शहरवासियों को काफी मदद मिली है। दीव में उपयोग की जाने वाली 95 प्रतिशत बिजली इन पैनलों द्वारा उत्पादित की जाती है, जिससे हमें अपने बिजली के बिलों को नियंत्रण में रखने में मदद मिली है। दीव दिन के समय पूरी तरह से सौर ऊर्जा पर चलने वाला भारत का पहला देश है। मैं राष्ट्रीय मंच पर हमारी पहल की सराहना करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहती हूँ। मैं अपने प्रशासक

को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ, जो हमेशा दीव के लोगों के लिए काम करने के लिए समर्पित रहते हैं।"

दीव के एक मछली निर्यातक **डॉ. हरेश रामजी सोलंकी** ने कहा, "प्रधानमंत्री के प्रदूषण मुक्त और हरित भारत के सपने को साकार करने के लिए हमारे प्रशासक श्री प्रफुल्ल पटेल ने एक अभियान चलाया, जिसमें शहर के विभिन्न स्थानों पर सोलर पैनल लगाए गए। मैं इस पहल के लिए हमारे शहर की सराहना करने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूँ। जब हमने उन्हें दीव की तारीफ़ करते सुना तो सब यहाँ बहुत खुश हुए।

दीव की एक अन्य निवासी **हिमांशी राजपूत** ने कहा, "पहले हम अपने पड़ोसी राज्य गुजरात से बिजली लेते थे, इससे बिल अधिक आता था, लेकिन आज हम इसका ज़्यादातर उत्पादन अपने शहर में ही करते हैं। हम न केवल अपनी अधिकांश ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा कर रहे हैं, बल्कि हम एक स्वच्छ और हरित भारत बनाने में भी योगदान दे रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री ने अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में हमारे शहर का ज़िक्र किया।"

दीव जैसी पहलों के साथ भारत नवीकरणीय ऊर्जा और सस्टेनेबल तरीकों को बढ़ावा देने में अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है। आइए हम सब साथ आएँ और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल और हरित भविष्य के निर्माण की दिशा में काम करें।

भारत में स्वच्छ ऊर्जा का नेतृत्व करती MSR-ऑलिव सोसायटी

भारत सरकार ने देश में स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। पिछले 9 वर्षों में ऐसी सभी पहलों में नागरिकों की भागीदारी ने भारत के सौर मिशन को आगे ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पुणे की MSR-ऑलिव सोसायटी द्वारा एक प्रशंसा योग्य पहल पर प्रकाश डाला, जहाँ निवासियों ने अपनी नियमित खपत के लिए बिजली पैदा करने के लिए सौर ऊर्जा को अपनाने का फैसला किया है। दो सौ से अधिक फ्लैट्स वाली इस सोसायटी के लोगों ने एकजुट होकर सौर पैनल स्थापित किए, जो हर साल लगभग 90 किलोवॉट/घंटे बिजली पैदा करते हैं। इस पहल के परिणामस्वरूप निवासियों ने लगभग हर माह 40,000 रुपये की बिजली बिल की बचत की है।

*दूरदर्शन की टीम ने इस पहल के बारे में और जानने के लिए MSR-ऑलिव सोसायटी के अध्यक्ष **रवींद्र अकोलकर** से बात की।*

"हमारी सोसायटी में पीने के पानी को ऊपर चढ़ाने और लिफ्ट के साथ-साथ परिसर में रोशनी करने और अन्य विविध उपयोगों के लिए बिजली की आवश्यकता होती है। इन सब पर हर साल लाखों की बिजली खर्च होती थी। 2016 में हमने अपनी छत पर सोलर पैनल लगाने के लिए सामूहिक रूप से पैसा खर्च किया। आज हम बिजली के बिल की चिन्ता किए बिना बिजली की अपनी सभी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। जिस तरह से प्रधानमंत्री ने हमारे प्रयासों की तारीफ की है, वह हमारे दिल को छू गया है। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

मेरा मानना है कि हर सोसायटी को ऐसी पहल करनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि प्रधानमंत्री द्वारा हमारी परियोजना का उल्लेख करने से बहुत सारे लोग ऐसे ही कदम उठाने के लिए प्रेरित होंगे।"

MSR-ऑलिव सोसायटी की निवासी दीपाली चंचड़ ने कहा, "आज प्रधानमंत्री की तारीफ़ों के कारण बहुत से लोग इस परियोजना के बारे में जानने के लिए हमसे सम्पर्क करते हैं। मेरे सहकर्मी, दोस्त और रिश्तेदार सभी जानना चाहते हैं कि हमने कितना निवेश किया और क्या प्रक्रिया थी। लोग अब स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में इसी तरह के कदम उठाने में अधिक रुचि ले रहे हैं। हम, MSR-ऑलिव सोसायटी के निवासी, प्रधानमंत्री से प्रेरणा ले रहे हैं और लोगों के किसी भी प्रश्न का जवाब देकर उनके मार्गदर्शन में योगदान दे रहे हैं। हमें बहुत गर्व है कि उनकी वजह से आज लोग हमारी सोसायटी को इस काम के लिए पहचान रहे हैं।"

पुणे में MSR-ऑलिव सोसायटी की सफलता इस बात का एक बड़ा उदाहरण है कि आने वाले समय में कैसे कम्युनिटी-लेड पहल स्वच्छ ऊर्जा और सस्टेनेबल तरीकों को बढ़ावा देने पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

सौराष्ट्र-तमिल संगमम्

भारत में 'विविधता में एकता' का उत्सव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्द, "एक भारत, श्रेष्ठ भारत," विविधता में एकता के भारतीय लोकाचार में गहराई से प्रतिध्वनित होते हैं। एकता की यह भावना **सौराष्ट्र-तमिल संगमम्** में खूबसूरती से दिखाई देती है, **एक सांस्कृतिक कार्यक्रम, जो गुजरात और तमिलनाडु के दो क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक** संगम का जश्न मनाता है। यह संगम भारत की बहुलतावादी विरासत का जीवंत प्रदर्शन है, जहाँ भाषा और संस्कृति सीमाओं को लाँघकर लोगों को जोड़ती हैं।

सौराष्ट्र-तमिल संगमम् गुजरात में 17 से 30 अप्रैल, 2023 तक आयोजित की जा रही एक अनूठी पहल है। इसका उद्देश्य सांस्कृतिक एकीकरण, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देना है। इस आयोजन को सौराष्ट्र और तमिलनाडु के कलाकारों, विद्वानों, कवियों, लेखकों और सांस्कृतिक उत्साही लोगों को एक साथ लाने के लिए आयोजित किया गया है। यह 10-दिवसीय कार्यक्रम चार अलग-अलग स्थानों, यानी सोमनाथ, द्वारका, राजकोट, और केवड़िया के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में आयोजित किया जाएगा।

सौराष्ट्र-तमिल सम्बन्ध

सौराष्ट्र-तमिल संगमम् का एक अनिवार्य पहलू तमिल-सौराष्ट्र **साहित्यिक सम्बन्ध** का उत्सव है। दोनों क्षेत्र विद्वानों के आदान-प्रदान का एक लम्बा इतिहास साझा करते हैं, दोनों क्षेत्रों के कई कवियों और लेखकों ने एक-दूसरे के कार्यों को प्रेरित किया है।

सौराष्ट्र-तमिल संगमम् का एक अन्य आकर्षण दोनों क्षेत्रों की **पारम्परिक कला और शिल्प** का प्रदर्शन है। यह आयोजन कला के विभिन्न रूपों की प्रदर्शनी लगाने के लिए तैयार है, जिसमें पर्यटकों को विविध कला रूपों का अनुभव प्राप्त होगा।

संगमम् दोनों क्षेत्रों की **साझा पाक विरासत** पर भी प्रकाश डालता है। पर्यटकों को तमिलनाडु और सौराष्ट्र, दोनों के स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद चखने को मिलता है, जिसमें चावल, दाल और मसालों के उपयोग सहित कई समानताएँ हैं।

सौराष्ट्र के तमिलों ने भी **स्वतंत्रता आंदोलन** में सक्रिय रूप से भाग लिया है और तमिलनाडु की कला, व्यापार और उद्योग में भी योगदान दिया है, जिसने उत्कृष्ट कौशल के साथ उत्पादित साड़ियों और कपड़ों के लिए जीआई टैग अर्जित किया है।

भारत जैसा कोई देश नहीं है- इतना विविध, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक, फिर भी साझा परम्पराओं, संस्कृति और मूल्यों के प्राचीन बन्धनों से एक साथ बँधा हुआ। इस तरह के बन्धनों को विभिन्न क्षेत्रों के लोगों और जीवन के तरीकों के बीच निरंतर पारस्परिक सम्पर्क के माध्यम से मज़बूत करने की आवश्यकता है ताकि यह पारस्परिकता को प्रोत्साहित करे और भारत में विभिन्न राज्यों के लोगों के बीच एकता की समृद्ध मूल्य प्रणाली को सुरक्षित करे।

सौराष्ट्र-तमिल संगमम्, इस प्रकार केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम से कहीं अधिक है; यह "विविधता में एकता" के विचार का एक वसीयतनामा है, जो भारतीय लोकाचार के मूल में है। आयोजन के दौरान होने वाले सांस्कृतिक आदान-प्रदान से बाधाओं को तोड़ने, दोस्ती और आपसी समझ को बढ़ावा देने, 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मज़बूत करने में मदद मिलेगी।

सौराष्ट्र तमिल संगमम् के बारे में जानने के लिए QR कोड स्कैन करें

डॉ. मनसुख मंडाविया
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण व रसायन और उर्वरक मंत्री

सौराष्ट्र-तमिल संगमम्
1,000 वर्ष पुराने सम्बन्धों का पुनर्जीवन

सौराष्ट्र तमिल संगमम्, जोकि 17 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2023 तक निर्धारित है, इसका उद्देश्य प्रधानमंत्री के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप विभिन्न राज्यों के लोगों को एक साथ लाना और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम गुजरात और तमिलनाडु में सौराष्ट्र के लोगों के बीच 1000 साल पुराने सम्बन्धों को उजागर करता है।

सौराष्ट्र के लोग तमिलनाडु में बसे हैं। उन्होंने एक अच्छा सामुदायिक जीवन स्थापित किया और क्षेत्र के व्यापार और अर्थव्यवस्था में योगदान दिया है। संगमम् इस सदियों पुराने रिश्ते को पुनर्जीवित करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुगम बनाने के साथ-साथ एक-दूसरे के साहित्य, व्यापार, जीवन शैली और सांस्कृतिक विरासत को समझने का प्रयास करता है।

सौराष्ट्र से आकर तमिलनाडु में बसे लोगों के साथ-साथ राज्य के मूल निवासी सौराष्ट्र तमिल संगमम् का हिस्सा बन रहे हैं। कार्यक्रम सोमनाथ, द्वारका, पोरबंदर और स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी पर आयोजित किए जाएँगे और उपस्थित लोगों का रास्ते में और रेलवे स्टेशन पर सौराष्ट्र के लोगों द्वारा स्वागत किया जाएगा। विश्वविद्यालयों में पारम्परिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे, जिसमें तमिल और गुजराती दोनों संस्कृतियों का प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, दोनों क्षेत्रों के विविध वस्त्रों की एक झलक प्रदान करने के लिए टेक्सटाइल एक्सपो भी आयोजित किए जाएँगे।

सौराष्ट्र के लोगों ने 1,000 साल पहले वहाँ बसने के बाद से तमिलनाडु में कई जीवन शैलियाँ अपनाई हैं। मदुरै के महाराजा ने उन्हें राज्य प्रदान किया और वे तमिलनाडु के जीवन के तरीके में एकीकृत हो गए। रसम उनके भोजन का एक हिस्सा है और वे अपने पारम्परिक व्यंजन फाफड़ा को साझा करना चाहते हैं। ऐसे कई दिलचस्प आदान-प्रदान के साथ, सौराष्ट्र-तमिल संगमम् दोनों दुनिया के सर्वश्रेष्ठ को एक साथ लाने के लिए तैयार हैं। सौराष्ट्र में तमिलनाडु के आगंतुकों के लिए इस संगमम् में भाग लेने की व्यवस्था की गई है, जहाँ उन्हें अपने व्यंजन साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा और संस्कृति, परम्परा और विरासत के माध्यम से दोनों क्षेत्रों के बीच सदियों पुराने सम्बन्धों को फिर से जगाया जाएगा।

यह सब और इससे भी अधिक प्रयास दोनों क्षेत्रों के बीच सम्बन्धों को मज़बूत करेंगे, जिससे राष्ट्र को सामंजस्य बनाने और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सच्चे सार का पोषण करने की प्रेरणा मिलेगी।

सौराष्ट्र तमिल संगमम् पर मनसुख मंडाविया का साक्षात्कार सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

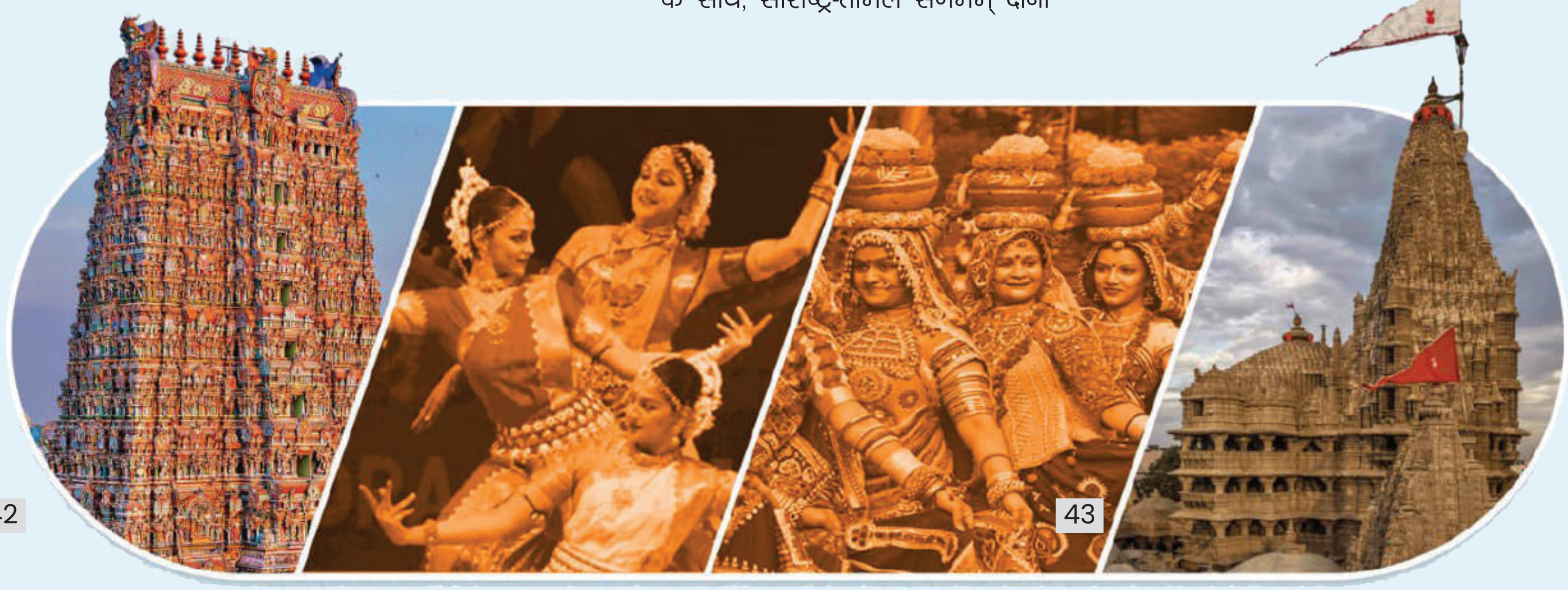

वीर लचित बोरफुकन

की 400वीं जयंती

लचित बोरफुकन, 17वीं शताब्दी के असम के अहोम साम्राज्य की शाही सेना के जनरल थे, जिन्होंने मुग़लों को हराया। लचित बोरफुकन ने 1671 में सरायघाट की लड़ाई में असमिया सैनिकों को प्रेरित किया और मुग़लों को अपमानजनक मात दी। लचित बोरफुकन और उनकी सेना की वीरतापूर्ण लड़ाई हमारे देश के इतिहास में प्रतिरोध के सबसे प्रेरक सैन्य कारनामों में से एक है।

लचित बोरफुकन का जीवन काम, कर्त्तव्य और वीरता पर एकाग्रता को दर्शाता है। वह अदम्य साहस के प्रतीक हैं और उनका मज़बूत, नि:स्वार्थ और दूरदर्शी नेतृत्व हमें उस असमिया राष्ट्र की याद दिलाता है, जिसकी कल्पना लचित बोरफुकन के बिना नहीं की जा सकती थी। लचित बोरफुकन का साहस और दूरदर्शिता हर असमिया के मन में है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना से देश को जोड़ना

गुमनाम नायकों को सम्मानित करने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप, देश लचित बोरफुकन की 400वीं जयंती मना रहा है। भारत के इस वीर सपूत को अमर बनाने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा 'लचित बोरफुकन - असम हीरो, हू हॉल्टेड द मुग़ल्स' नामक पुस्तक का विमोचन किया। कुछ दिनों पहले, लचित बोरफुकन के जीवन पर आधारित निबन्ध लेखन का अभियान 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को जगाते हुए शुरू किया गया था।

- गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया
- 45 लाख प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं
- 23 से अधिक भाषाओं में प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं
- बोडो, नेपाली, संस्कृत और संथाली में भी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं

क्या आप जानते हैं?

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) भारत के बहादुर सैनिकों को प्रेरित करने और लचित बोरफुकन की वीरता को याद करने के लिए 1999 से हर साल अपने सर्वश्रेष्ठ पासिंग आउट कैडेट को लचित बोरफुकन स्वर्ण पदक प्रदान करती है।

जम्मू-कश्मीर का नदरू FPO

किसानों को दे रहा नया जीवन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम की 99वीं कड़ी में डल झील और झील में उगाई जाने वाली कमल ककड़ी का ज़िक्र किया, जिसे कश्मीर में नदरू कहा जाता है। कश्मीर के नदरू की माँग लगातार बढ़ रही है। इसी माँग को लेकर डल झील में नदरू की खेती करने वाले किसानों ने FPO का गठन किया है। आज इन किसानों ने अपने नदरू को विदेशों में निर्यात करना शुरू कर दिया है।

डल झील लोटस स्टेम FPO

डल झील में नदरू की खेती करने वाले लगभग 250 किसान 'डल लेक लोटस स्टेम FPO' बनाने के लिए साथ आए हैं। इस FPO ने उन्हें सामूहिक रूप से अपनी उपज का विपणन करने, ऋण और बीमा प्राप्त करने और कृषि पद्धतियों के बारे में ज्ञान और जानकारी साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। यह FPO किसानों को बेहतर बाज़ारों, भंडारण सुविधाओं और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों तक पहुँच भी प्रदान कर रहा है, जिससे उन्हें अपनी उपज के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलती है।

यह नवगठित FPO कश्मीर में किसानों के आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हुआ है और इस क्षेत्र के हज़ारों किसानों की आजीविका में सुधार करने में मदद कर रहा है। डल झील लोटस स्टेम FPO ने हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात को नदरू की दो खेप का निर्यात किया था।

नदरू

डल झील में उगने वाले कमल के पौधों की जड़ों से नदरू काटे जाते हैं। नदरू का उपयोग विभिन्न प्रकार के कश्मीरी व्यंजनों में किया जाता है, जैसे कि करी, स्टू, पकौड़े और सलाद। खाने के अलावा नदरू को फ़ाइबर, विटामिन और खनिजों का एक अच्छा स्रोत मान जाता है, जिसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं। यह प्रतिरक्षा को मज़बूत करता है, रक्तचाप को नियंत्रित करता है, पाचन में सुधार करता है, वजन प्रबंधन में मदद करता है और जल प्रतिधारण को रोकता है।

FPO क्या होता है?

किसान उत्पादक संगठन (FPO) किसानों के लाभ के लिए किसानों का एक सामूहिक संगठन होता है। 'बीज से लेकर बाज़ार तक -- उद्देश्य है किसानों की समृद्धि।' 10,000 FPO के गठन और संवर्धन की केंद्रीय क्षेत्र योजना के तहत एक पेशेवर एजेंसी, क्लस्टर-आधारित व्यवसाय संगठन (CBBO) किसान सदस्यों की भागीदारी के साथ एक व्यवसाय योजना तैयार करता है। इस व्यवसाय योजना में उत्पादन से लेकर निर्यात तक, सम्पूर्ण मूल्य श्रृंखला शामिल होती है।

डल झील लोटस स्टेम FPO किसानों की बदल रही किस्मत

मुहम्मद अब्बास भट्ट
मैनेजिंग डायरेक्टर, डल लेक लोटस स्टेम प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड

हम पुरखों के समय से यह काम करते आ रहे हैं। जॉब न मिलने के बाद हम इसी काम में लगे थे कि क्यों न हम अपना कुछ करें और अपना रोज़गार खुद बनाएँ। बहुत सोच विचार कर मेरे मन में यह ख़याल आया कि मैं लोटस स्टेम का FPO बनाऊँ और इस FPO के ज़रिए पहले तो हमें खुद रोज़गार मिल सके और साथ ही जो हमारे किसान भाई हैं, उनका भी इसमें फ़ायदा हो और उनको भी रोज़गार मिले।

रजिस्ट्रेशन के साथ-साथ हमने दो कन्साइनमेंट दुबई भेजे, जिसमें हमारा सीधा फायदा हुआ। इसमें कोई ब्रोकर शामिल नहीं है। इसकी वज़ह से ज़्यादा से ज़्यादा किसान हमारे साथ जुड़ने लगे। इस समय हमारे साथ 250 किसान जुड़े हैं और काम कर रहे हैं। जबसे हमने दुबई एक्सपोर्ट करना शुरू किया है, हमें सीधा फायदा मिल रहा है। इसकी वजह से और भी किसान हमारे साथ जुड़ रहे हैं। हमारा लक्ष्य है कि अगले साल 1000-1500 किसान हमारे साथ जुड़ें। हमें उम्मीद है कि आने वाले दिनों में हमें सरकार की तरफ़ से नाबार्ड के ज़रिए मदद मिलेगी।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री मोदी जी ने हमारे FPO डल लेक लोटस स्टेम की जो बात की है, इससे काफी सारे किसान इसके बारे में अवेयर हुए हैं। मुझे बहुत ख़ुशी है कि उन्होंने हमारे FPO की तारीफ़ की।

हमारा फ्यूचर प्लॉन यह है कि हम पोस्ट हॉरवेस्टिंग के लिए जाएँ। पिछली बार यहाँ पर DC भी आए थे। उन्होंने यहाँ का मुआयना किया और किसानों से मिले। उन्होंने कहा कि वे होटल्स और अस्पतालों से भी हमें जोड़ेंगे, जिससे हम अपने इस 100 परसेंट आर्गेनिक प्रॉडक्ट को प्रमोट कर पाएँगे। हम चाहते हैं कि यह प्रॉडक्ट ज़्यादा से ज़्यादा एक्सपोर्ट हो। हम सरकार से अपील करते हैं कि वह हमें ज़्यादा-से-ज़्यादा मार्किट उपलब्ध करवाए, देश के बाहर भी और अन्दर भी, जिससे हम एक्सपोर्ट भी कर सकें और हमारे लोटस स्टेम और अन्य सब्जियाँ हिन्दुस्तान के कोने-कोने तक पहुँच सकें।

लोटस हमारा राष्ट्रीय फूल है। मैं बहुत खुश हूँ कि 'मन की बात' में लोटस स्टेम का ज़िक्र हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जो इसकी बात की है, उससे हमारे किसान भाई बहुत खुश हैं। इससे हमारी ज़्यादा मार्किट बनेगी और हम हिन्दुस्तान के हर कोने में अपना प्रोडक्ट पहुँचा पाएँगे। मैं किसान भाइयों से यह अपील करना चाहूँगा कि वे आएँ और हमारे साथ जुड़कर, कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें ताकि इस FPO को हम और आगे बढ़ा सकें। इसमें जितने किसान जुड़ेंगे, उतनी हमें मदद मिलेगी और हम इसमें ज़्यादा-से-ज़्यादा फायदा उठा सकेंगे।

जम्मू-कश्मीर के लैवेंडर किसान

बैंगनी क्रांति

जम्मू-कश्मीर 'बैंगनी क्रांति' का गवाह बन रहा है। पारम्परिक फ़सलों से हटकर अरोमा मिशन के तहत किसान बैंगनी रंग के सुगंधित झाड़ीदार लैवेंडर की खेती कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में डोडा ज़िले के भद्रवाह शहर का उल्लेख किया, जहाँ 2,500 से अधिक किसान लैवेंडर की खेती कर रहे हैं। 2022 में भद्रवाह में भारत का पहला लैवेंडर फ़ेस्टिवल आयोजित किया गया, क्योंकि डोडा भारत की बैंगनी क्रांति का जन्मस्थान है, लैवेंडर को 'डोडा ब्रांड प्रोडक्ट' के रूप में भी नामित किया गया है।

अरोमा मिशन क्या है?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के अरोमा मिशन का उद्देश्य लैवेंडर जैसे पौधों की खेती को बढ़ावा देना है, जिनमें सुगंधित औषधीय गुण होते हैं। इसका उद्देश्य आयातित सुगंधित तेलों से स्वदेशी किस्मों की ओर बढ़ना है। मिशन के तहत पहली बार लैवेंडर की खेती कर रहे किसानों को पौधे नि:शुल्क दिए जाते हैं। 2016 में जम्मू-कश्मीर में प्रारम्भ हुई यह पहल आज केंद्र शासित प्रदेश के सभी 20 ज़िलों तक पहुँच चुकी है।

एसेंशियल ऑइल सुगंधित पौधों का मुख्य आर्थिक घटक है, जो डिस्टिलेशन यूनिट्स को नियोजित करके निकाला जाता है। CSIR ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंटीग्रेटिव मेडिसिंस, जम्मू के साथ मिशन के तहत जम्मू-कश्मीर में विभिन्न स्थानों पर 50 डिस्टिलेशन यूनिट्स स्थापित की हैं।

लैवेंडर क्यों?

लैवेंडर सूखे में फल-फूल सकता है और निम्न से मध्यम उपजाऊ मिट्टी में सबसे अच्छा बढ़ता है।

एक अकेला लैवेंडर का पौधा 15 साल तक फूल देता है।

लैवेंडर एक अत्यधिक माँग वाला उत्पाद है। बाज़ार में इन फूलों से निकाले गए तेल की कीमत कम-से-कम ₹10k/लीटर है।

यह तेल अपनी सुगंध और औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग साबुन, अगरबत्ती, सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र और एयर फ्रेशनर में किया जाता है।

सफलता की ख़ुशबू

लैवेंडर की खेती से UT में लगभग 5,000 किसानों और उद्यमियों को रोज़गार मिला है।

इससे छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि हुई है और कृषि-आधारित स्टार्टअप्स के विकास को गति मिली है।

महिला सशक्तीकरण में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। कई युवा महिला उद्यमियों ने लैवेंडर ऑयल, हाइड्रोसोल और फूलों के मूल्यवर्धन के माध्यम से छोटे पैमाने पर व्यवसाय शुरू किया है।

एसेंशियल और सुगंधित तेलों के आयात में कमी आई है।

डॉ. सुमित गैरोला
नोडल वैज्ञानिक (CSIR-अरोमा मिशन)

अरोमा मिशन के साथ आत्मनिर्भर बन रहे हैं जम्मू-कश्मीर के किसान

IIIM-जम्मू भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एपेक्स साइंटिफ़िक बॉडी, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के अरोमा मिशन की एक प्रयोगशाला है। यहाँ हम विभिन्न औषधीय सुगंधित पौधों की सघन फसलों पर काम करते हैं।

जब प्रधानमंत्री ने 2014 में किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य दिया तो हमारे वैज्ञानिकों ने काफी शोध किया और इस पर गहन चिन्तन किया। हमने पाया कि कुछ ऐसी सुगंधित फसलें हैं या जिन्हें अरोमैटिक क्रॉप्स भी कहा जाता है, उनमें कितना ज़्यादा अनटैप्ड पोटेंशियल है, पर आज तक इन पर कोई खास काम हुआ नहीं है और ये किसानों तक नहीं पहुँची हैं। हमने निर्णय लिया कि हम ऐसी फसलों को किसानों तक लेकर जाएँगे और उसी कड़ी में 2017 में अरोमा मिशन की शुरुआत की गई।

आज आप जैसा कि देख सकते हैं कि भद्रवाह जैसे क्षेत्र, जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 99वें एपिसोड में किया, वहाँ के किसान लैवेंडर की फसल लगा रहे हैं और काफ़ी फायदा पा रहे हैं। इसे आज विश्वभर में बैंगनी क्रान्ति के नाम से जाना जा रहा है। इस मिशन के अन्तर्गत हमने कोशिश की कि किसानों तक पहुँचें, उन तक लैवेंडर की फसल लेकर जाएँ, (जिसका करीब 99 प्रतिशत से ज़्यादा आयात किया जाता है) और किसानों को उसमें आत्मनिर्भर बनाएँ।

यहाँ के किसान काफ़ी मेहनती हैं और प्रगतिशील हैं। उन्होंने लैवेंडर की खेती को हाथोहाथ अपनाया है। तकरीबन 6 साल हमने मेहनत की और विज्ञान एवं प्रोद्योगिक मंत्रालय के राज्य मंत्री, डॉ. जीतेन्द्र सिंह ने इस कार्य को आगे ले जाने के लिए हमे काफ़ी प्रोत्साहित किया, जिस कारण हम इस क्षेत्र में और काम कर पाए। हमने तक़रीबन 35 लाख से अधिक लैवेंडर के पौधे 2,000 से ज़्यादा किसानों को मुफ्त में उपलब्ध करवाए। ट्रेनिंग देकर हमने स्किल डेवलपमेंट में भी उनकी मदद की और उन्हें इंडस्ट्री से जोड़ा है। अलग-अलग स्थानों पर डिस्टिलेशन यूनिट्स भी स्थापित की गई हैं।

आज, अरोमा मिशन के तहत हम पूरे जम्मू-कश्मीर में 50 से अधिक डिस्टिलेशन यूनिट्स स्थापित कर चुके हैं। आने वाले समय में हम किसानों को और प्रशिक्षित कर रहे हैं। हम उन्हें सिखा रहे हैं कि लैवेंडर की खेती कैसे करते हैं, जिससे किसानों की आय में बढ़ोतरी हो सके। एक किसान, जो एक कनाल पर 2,000 से 2,500 रुपये कमाता था, आज वही किसान 9 कनाल पर 90,000 से 95,000 रुपये काफ़ी आराम से कमा रहा है, साथ ही किसान अपने खुद के प्रोडक्ट्स बनाकर मार्केट में उतार रहे हैं, चाहे वह ऑनलाइन पर हों या लोकल लेवल पर हों। काफ़ी सारे नए युवा उद्यमी भी इससे जुड़ते जा रहे हैं। यह एक बहुत बड़ी सफलता है।

मैं प्रधानमंत्री का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहूँगा कि उन्होंने 99वें 'मन की बात' में अरोमा मिशन का ज़िक्र किया। इस कारण किसानों में बहुत ज़्यादा ख़ुशी की लहर है और वैज्ञानिक भी बहुत ज़्यादा उत्साहित हैं कि ज़्यादा-से-ज़्यादा किसानों को इस मिशन से जोड़ा जाए।

बैंगनी क्रान्ति के बारे में और जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

डॉ. परवेज़ काज़ी

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग, CSIR – IIIM, श्रीनगर

“हमने इस अरोमा मिशन को 2017 में भारत सरकार के सहयोग से शुरू किया था। इस मिशन के तहत पाँच CSIR काम कर रहे हैं, जिसमें किसानों, विशेष रूप से सीमांत किसानों को इन सुगंधित फ़सलों (अरोमैटिक क्रॉप्स) की गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री प्रदान करके सहायता प्रदान की जाती है। हमने इन अरोमैटिक क्रॉप्स की खेती डोडा के विभिन्न ज़िलों में शुरू की, उदाहरण के लिए भद्रवाह, जो आज बैंगनी क्रांति के लिए जाना जाता है। किसान वास्तव में खुश हैं, क्योंकि उनकी आय में दो से चार गुना वृद्धि हुई है।

गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री के अलावा, हम इन किसानों को सभी तकनीकी जानकारी प्रदान करते हैं। हम उनके लिए CSIR के कई फ़ील्ड स्टेशनों पर डेमोंस्ट्रेशन करते हैं और उन्हें दक्ष बनाते हैं। हम इन अरोमैटिक क्रॉप्स की खेती के सम्बन्ध में जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं। अरोमा मिशन से पहले सीमांत किसान, जो पारम्परिक फ़सलों की खेती करते थे, उन्हें अपनी ज़मीन से लाभ नहीं मिल पाता था, परन्तु पिछले छह वर्षों से हमने देखा है कि ये किसान बेहतर तरीके से कमाई करने में सक्षम रहे हैं।

फिलहाल हम सिर्फ़ एसेंशियल ऑयल का उत्पादन कर रहे हैं और इसे देश-विदेश के विभिन्न उद्योगों को बेच रहे हैं। हम जिस तेल का उत्पादन कर रहे हैं, उसकी गुणवत्ता अन्तरराष्ट्रीय मानक के अनुरूप है। मैं युवाओं से इस क्षेत्र को चुनने की अपील करना चाहता हूँ, क्योंकि इसमें औषधीय और सौन्दर्य, दोनों ही दृष्टि से काफ़ी सम्भावनाएँ हैं।

हाल ही में 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने हमारे प्रयासों की सराहना की थी। यह मिशन के सभी सदस्यों के लिए एक प्रोत्साहन है, जिन्होंने इस क्षेत्र के विकास के लिए पिछले छह वर्षों से कड़ी मेहनत की है और ऐसा करना जारी रखे हुए हैं।”

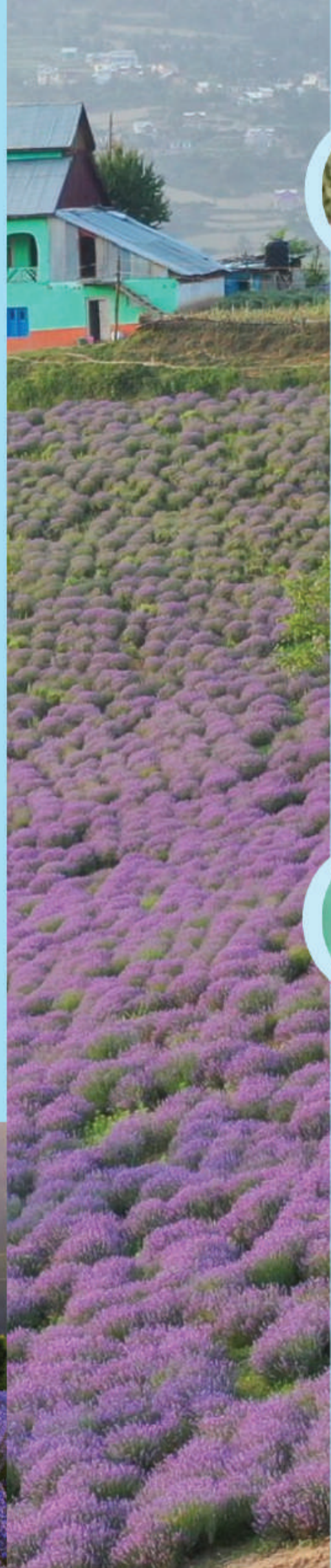

भारत भूषण

खिलानी गाँव, डोडा, जम्मू-कश्मीर

“मैंने 2010 से लैवेंडर की खेती शुरू की थी, उससे पहले मैं मक्की की खेती करता था। थोड़ी सी ज़मीन में मैंने इसको लगाया, दो कनाल से मैंने शुरू किया था। उस टाइम एक रिस्क था कि पता नहीं फ़ायदा होगा या नहीं, पर दो साल बाद मुझे जो फ़ायदा हुआ, वो मक्की की खेती से 4-6 गुना ज़्यादा था। मैंने अपनी दूसरी ज़मीनों में भी इसको लगाना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे अपनी नर्सरी भी शुरू की। मेरे पास जो 10 कनाल ज़मीन थी, उस सारी ज़मीन पर मैंने लैवेंडर लगाया। तब जाकर लोगों को यकीन आया और मेरे गाँव के लोग मुझसे जुड़े। 2017 में शुरू हुए अरोमा मिशन में किसानों को मुफ़्त प्लांटिंग मैटेरियल मिला। जब 500-600 लोग इससे जुड़े तो 2020 में मुझे दिल्ली बुलाया गया। वहाँ मुझे नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया, जिससे और ज़्यादा लोग जागरूक हो गए। 2020 से अरोमा मिशन का पार्ट 2 शुरू हो गया, जिसमें हमने मार्च, 2020 से मार्च, 2023 तक 2,500 लोग अपने साथ जोड़ लिए, जिनमें महिलाएँ भी शामिल हैं। मोदीजी का जो नारा है, आत्मनिर्भर भारत का, वो भी पूरा हो गया। 2 किलो अरोमैटिक तेल से शुरू करते हुए मैं आज 15 क्विंटल तेल डिस्ट्रीब्यूट कर पा रहा हूँ। मुझे बहुत ख़ुशी होती है कि प्रधानमंत्री ने भद्रवाह का नाम 'मन की बात' में लिया। पूरा देश और पूरी दुनिया देख रही है हमने बैंगनी क्रान्ति को सफल बनाया है।”

तौकीर बागबान

भद्रवाह, सदस्य लैवेंडर मिशन

"शुरुआत में, मेरे विचारों पर किसी ने विश्वास नहीं किया और मक्के और धान की पारम्परिक खेती से एक नई तरीके की खेती पर स्विच करना एक कठिन कार्य लग रहा था, लेकिन मैंने अपना संकल्प रखा और पूरी चेनाब घाटी की यात्रा की ताकि लोगों को अपने तरीकों का महत्त्व समझा सकूँ, यहाँ तक कि मैंने किसानों को यह प्रस्ताव और आश्वासन भी दिया कि अगर वे अरोमैटिक क्रॉप्स की खेती को लाभदायक नहीं पाते हैं तो मैं उनके सभी नुकसान उठाऊँगा। किसानों ने धीरे-धीरे, लेकिन लगातार, पारम्परिक फसलों से स्विच करना शुरू कर दिया और जब 2016 में CSIR-IIIM, जम्मू के माध्यम से S&T मंत्रालय ने अरोमा मिशन शुरू किया, तो इस पहल ने गति पकड़नी शुरू कर दी। नतीजतन, आज 2,500 परिवार सफलतापूर्वक एक्सॉटिक लैवेंडर उगा रहे हैं और भद्रवाह भारत में लैवेंडर का अग्रणी उत्पादक बन गया है। मैं हमेशा से ही स्थानीय उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग रोज़गार सृजित करने और छोटे और सीमांत किसानों के लिए लाभदायक आजीविका के अवसर प्रदान करने के लिए करना चाहता था।"

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

vivek kute @drvivekkute

Organ donation by one person can give life to 8-9 people: PM Modi in 'Mann Ki Baat' @NottoIndia @DghsIndia @PMOIndia @narendramodi @mansukhmandviya @ISNkidneycare @IndiaSoTx @WHO

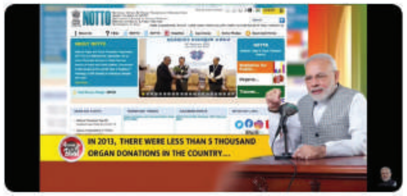

Neha Bagaria • 2nd
Founder & CEO, JobsForHer
2w • Edited

+ Follow

Honourable Prime Minister Narendra Modi, recently in his "Mann Ki Baat" - Cited "naari shakti" (women power) as the oxygen of a developed India and we could not agree more.

From Sports to Politics to Indian Army to the Oscars Indian women are leading from the front in diverse spheres.

The achievements are a testament to our progress and serve as a reminder that while there is still a long way to go, we are steadily making strides towards our goals.

👏 Let's continue to support, enable and applaud women in areas such as education, entrepreneurship, leadership and more to unlock their full potential and drive progress for our country.

What areas do women in our country need the most encouragement in? Drop a comment below.

#WomenEmpowerment #IndiaLeading #RoundOfApplause

P.S. Saini @pssaini1

Kashmir's Nadru in High Demand Across Country: says PM Modi in 'Mann Ki Baat'

Prime Minister Narendra Modi highlighted the increased demand for lotus stems, known locally as 'Nadru,' in his monthly radio programme Mann Ki Baat.

lnkd.in/dsGiP6d6

krishijagran.com
Kashmir's Nadru in High Demand Across Country: says PM Modi in 'Mann Ki ...
Prime Minister Narendra Modi highlighted the increased demand for lotus stems, known locally as 'Nadru,' in his monthly radio programme Mann Ki Baat.

Daman Administration @CollectorDaman

In the 99th edition of Mann ki Baat, the Hon'ble PM Shri Narendra Modi Ji has lauded the contribution of the people of Diu district as it became the first ever district in the country to meet 100% daytime electricity requirements through solar power generation.

Msr-Olive
March 26 at 3:49 PM

Proud Moment for All of us from Olive Society.

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar · Mar 26
India government official

PM @narendramodi announced that Saurashtra Tamil Sangamam will be held in April. It will revive the age old connections between Saurashtrians and Tamilians.

PM also recognized the prowess of Nadru farmers in Kashmir whose exports are now reaching the UAE.

Shobha Karandlaje @ShobhaBJP

Kashmiri farmers' FPO sees success in exporting Nadru (lotus stems) to the UAE.

J&K farmers' success story of aroma and fragrance.
#MannKiBaat

Manohar Lal @mlkhattar

मृत्यु के उपरांत Organ Donate करने से बड़ा कोई दान नहीं।

पीएम श्री @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat कार्यक्रम में दिल को छू लेने वाले उदाहरणों से सभी देशवासियों से इस परोपकार के कार्य में आगे आने का आह्वान किया।

देश के नागरिकों का निरंतर मार्गदर्शन करने के लिए प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार।
Translate Tweet

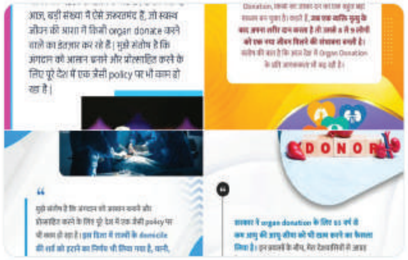

12:38 PM · Mar 26, 2023 · **41.2K** Views

Meenakashi Lekhi @M_Lekhi

काशी तमिल संगमम के दौरान, काशी और तमिल क्षेत्र के बीच सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को Celebrate किया गया।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना हमारे देश को मजबूती देती है।
#MannKiBaat
Translate Tweet

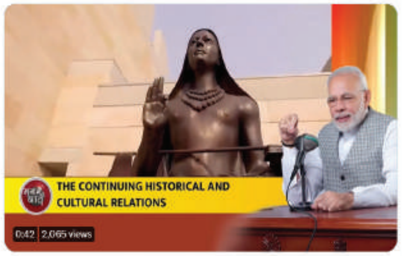

3:22 PM · Mar 26, 2023 · **6,012** Views

Piyush Goyal @PiyushGoyal

एक Organ Donation से बच सकती है 8-9 लोगों की जान।

#MannKiBaat
Translate Tweet

11:57 AM · Mar 26, 2023 · **25.1K** Views

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

असम से #EKBharatSresthaBharat की एक शानदार मिसाल।

लाचित बरफूकन पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में 45 लाख लोगों ने, 23 अलग-अलग भाषाओं में निबंध लिखकर विश्व रिकॉर्ड बनाया।
#MannKiBaat
Translate Tweet

12:26 PM · Mar 26, 2023 · **15K** Views

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

It is a matter of satisfaction that today awareness about organ donation is rising in the country.

~ Hon PM Shri @narendramodi Ji in #MannKiBaat today

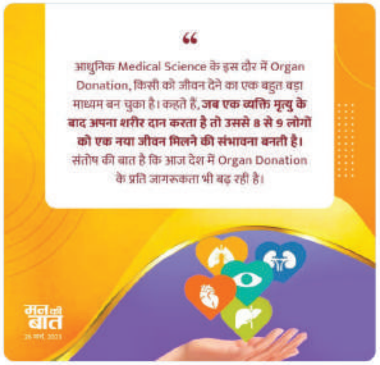

11:19 AM · Mar 26, 2023 · **12.9K** Views

Keshav Prasad Maurya @kpmaurya1

आज जब हम आज़ादी का अमृतकाल मना रहे हैं, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तो 100 वें 'मन की बात' को लेकर, आपके सुझावों, और विचारों को जानने के लिए मैं भी बहुत उत्सुक हूँ। मुझे, आपके ऐसे सुझावों का बेसब्री से इंतज़ार है।
Translate Tweet

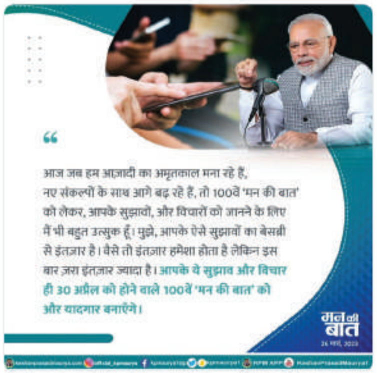

12:15 PM · Mar 26, 2023 · **5,958** Views

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj

प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी आपकी प्रेरणा से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में म.प्र. तीव्रतम गति से आगे बढ़ रहा है। रीवा में 750 मेगावॉट के बाद अब ओंकारेश्वर में 600 मेगावॉट का फ्लोटिंग सोलर पावर प्लांट का कार्य प्रगतिरत है। सांची शीघ्र ही पूर्णत: सौर ऊर्जा से रोशन होगी।#MannKiBaat

Translate Tweet

> **PMO India** @PMOIndia · Mar 26
> India government organization
> The speed with which India is moving forward in the field of solar energy is a big achievement in itself. #MannKiBaat

1:21 PM · Mar 26, 2023 · **13.4K** Views

Smriti Z Irani @smritiirani

भारत का मान-सम्मान और सामर्थ्य बढ़ाने में महिलाओं की भूमिका को #MannKiBaat कार्यक्रम में साझा करने के लिए PM @narendramodi जी का आभार।

नए भारत की #NariShakti आज सम्पूर्ण गौरव और ज़ज़्बे के साथ सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने का साहस रखती है।

Translate Tweet

3:16 PM · Mar 26, 2023 · **24.3K** Views

Yogi Adityanath @myogiadityanath

'अंगदान' वास्तविक अर्थों में जीवन-दान है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने आज @mannkibaat में आमजन को जागरूक करने हेतु अंगदान की उपयोगिता के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की है।

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अंगदान की प्रक्रिया को बहुत आसान बनाया जा रहा है।

आपका आभार प्रधानमंत्री जी!

Translate Tweet

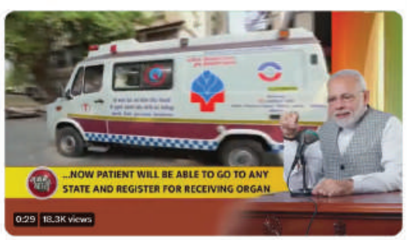

1:38 PM · Mar 26, 2023 · **79.9K** Views

Aijaz Asad @AsadamAijaz

Success Story:Newly formed FPO in Srinagar "Dal Lake Lotus Stem Farmers Producer Company Ltd" has been able to export 2 consignments of Nadru to UAE thru Lulu Group fetching a good price to the producers. Company has 250 Shareholders providing livelihoods to nearly 1000 persons.

CSIR-IIIM @csiriiim

Hon'ble PM of India Shri Narendra Modi ji appreciated the work of @CsirAroma @CSIR_IND for #Lavender cultivation through @csiriiim in #Bhaderwah #Doda in @ModiKeManKiBaat #PurpleRevolution bringing smiles to farmers #JammuKashmir @zabeerahmedb @DrNKalaiselvi @DrJitendraSingh

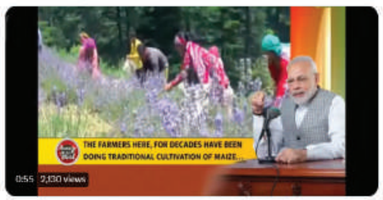

4:34 PM · Mar 26, 2023 · **7,183** Views

ROTTO NORTH @PgimerRotto

PM Modi Interacts with Nation in Mann Ki Baat about Organ donation| 26th March 2023 | @PMOIndia @NottoIndia @MSPGIMER

youtube.com
PM Modi Interacts with Nation in Mann Ki Baat l 26th Mar...
Prime Minister Narendra Modi------------------------------------►Subscribe ...

1:39 PM · Mar 26, 2023 · **249** Views

J&K SOTTO @Sotto_JandK

PM urges all to Opt for Organ Donation

11:01 AM · Mar 27, 2023 · **100** Views

PM: Women achievers are driving dreams of India

New Delhi: Citing "naari shakti" (women power) as the oxygen of a developed India, PM Narendra Modi in his "Mann Ki Baat" on Sunday highlighted empowering stories of women leading from the front in diverse spheres. From Asia's first loco pilot Surekha Yadav to the women director and producer duo of the documentary "The Elephant Whisperers", who brought laurels to the country by winning an Oscar, the PM said all such women are giving energy to India's dreams.

Highlighting that women are at the forefront even in the most difficult of terrains in the country, the PM spoke of "brave-heart" Captain Shiva Chauhan of the Indian Army. He highlighted that she has become the first woman officer to be posted in Siachen.

The PM described the victory of two women legislators as "a new beginning in Nagaland". He spoke of his meeting with the "brave daughters" who went to help the people of Turkey after the earthquake. All of them were part of the NDRF contingent. TNN

['MANN KI BAAT']

Help save lives, embrace organ donation, says PM

HT Correspondent

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged the countrymen to opt for organ donation, reiterating the Centre's decision to roll out a uniform policy, and removing the minimum age threshold and domicile rule to ease the process.

"It is said that when a person donates one's body after death, it creates a possibility for eight to nine people to get a new life," the Prime Minister said in the 99th episode of his monthly 'Mann ki Baat' broadcast. "One decision of yours can save the lives of many people," he added.

The PM also spoke to the family members of people whose organs were donated after death, including an Amritsar-based couple who decided to donate the organs of their 39-day-old daughter. "Great donors like them make us understand the importance of life. In our country today there are a large number of needy people who are waiting for an organ donor in the hope of a healthy life. It is a matter of utmost satisfaction for me that in order to make organ donation easy and to encourage it, work is being done on a uniform policy in the whole country," he said.

Narendra Modi

"I urge the countrymen that organ donors should come forward in maximum numbers. One decision of yours can save the lives of many people," he added.

Last month, the Union health ministry said it is working on a "One Nation, One Organ Allocation" policy in consultation with states to come up with uniform guidelines for registration, allocation and other aspects of the process.

Emphasising that there is a rise in awareness about organ donation in the country, the PM said, "In the 2013, there were less than 5,000 cases of organ donation in our country; but in 2022, this number has increased to more than 15,000. People who have done organ donation, their families, have actually accomplished a lot of Punya!"

Highlighting the government's efforts of making it an easy process, the Prime Minister said that the condition of being a state domicile for receiving organs has been removed to allow the needy to register themselves anywhere in the country. "A decision to remove the age criteria of being less than 65 years for donating organs has also been taken," he said.

During his address, the PM lauded the increasing "woman power" in the country.

From praising the two women behind *The Elephant Whisperers*, which became the first Indian production to win an Oscar, to Asia's first female loco pilot Surekha Yadav, the PM pointed out several examples to showcase the role of India's 'Nari Shakti' in realising India's true potential.

"You all would have definitely seen Surekha Yadav, who became Asia's first loco pilot. She set a precedent by becoming the first woman loco pilot of Vande Bharat Express. In the same month itself, producer Guneet Monga, and director Kartiki Gonsalves made the whole nation proud, by winning Oscar for their documentary Elephant Whisperers," he said.

PM praises parents of youngest organ donor

In her death, 39-day-old saved life of 15-yr-old

ASKS COUPLE TO SHARE STORY

GOD HAD A PLAN FOR HER

Our daughter was fighting a losing battle for her life at the PGI, Chandigarh. We felt God had a plan for her and decided to donate her organs so that she could save someone's life.

PM: Working on uniform policy for organ donation

FROM PAGE 1

The Prime Minister said, "In our country today there are a large number of needy people waiting for an organ donor. I am happy that in order to make organ donation easy and encourage it, work is being done on a uniform policy. Now a patient will be able to go to any state in India and register for receiving the organs."

"The government has also abolished the age limit of below 65 years for organ donation. I urge organ donors to come forward in large numbers. One decision of yours can save the lives of many people, can give life." The Prime Minister noted that when a person donates their body after death, it creates a possibility for eight to nine people to get a new life.

Noting the rise of women in different fields, the Prime Minister said that womanpower was playing a big role in India's growing strength. He mentioned several examples, including that of Surekha Yadav becoming the first women loco pilot in Asia.

"Producer Guneet Monga and director Kartiki Gonsalves brought laurels to the country by winning an Oscar for their documentary, *The Elephant Whisperers*," he said and also lauded women's role in the NDRF's relief and rescue work in Turkiye.

Mentioning the recent Nagaland elections, Modi said, "If you look at politics, a new beginning has taken place in Nagaland. In Nagaland, for the first time in 75 years, two women legislators have reached the Vidhan Sabha. One of them was also made a minister. For the first time the state has got a woman minister."

He further noted that in the field of clean energy, India's growing presence is being lauded globally.

"The speed with which India is moving forward in solar energy is a big achievement in itself. Diu has become the first district in India to consume only clean energy. Through solar panels, more electricity is being generated in Diu than required. Through this solar project, about ₹52 crore have also been saved," he said.

"Such programmes are driven by the spirit of 'Ek Bharat-Shreshtha Bharat'," the Prime Minister said.

'Women empowerment playing big role in pushing India's growth'

Our Bureau
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi, on Sunday, said Indian women and their empowerment are playing a big role in pushing India's growth, noting that this energy of women's power is the "oxygen of a developed India".

Addressing the 99th edition of his monthly radio programme *Mann Ki Baat*, Modi said 'nari shakti' (women power) is leading from the front.

To buttress his point, Modi reeled out several recent examples.

"You must have seen Asia's first female loco pilot Surekha Yadav on social media. Surekha ji, setting another record, has become the first woman loco pilot of Vande Bharat Express as well. This month, producer Guneet

Prime Minister Narendra Modi

Monga and director Kartiki Gonsalves brought laurels to the country by winning an Oscar for their documentary, *The Elephant Whisperers*. Sister Jyotirmayi Mohanty, a scientist of Bhabha Atomic Research Center, has also notched another achievement for the country. Jyotirmoyee has received a special award from IUPAC in the field of Chemistry and Chemical Engineering," Modi said.

The Prime Minister also lauded the achievements of India's Under-19 women's cricket team, which created history by winning the T-20 World Cup.

Even in politics, a new beginning has taken place in Nagaland. For the first time in 75 years, two women legislators have reached the Vidhan Sabha through their victory, Modi noted. "One of them has also been made a minister in the government of Nagaland, that is, for the first time the people of the State have also got a woman minister," he added.

India has also deployed a women-only platoon in the peacekeeping force under the UN Mission.

SOLAR ENERGY SECTOR

Modi highlighted the speed with which India is moving forward in the field of solar energy, noting that it is a big achievement. The spirit of 'Sabka Prayas' is taking over India's solar mission today, Modi added.

अंगदान को आसान बनाने के लिए देश में एक नीति पर हो रहा काम : मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा, सरकार ने 65 वर्ष से कम आयु की उम्र सीमा को भी खत्म करने का किया फैसला

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अंगदान को आसान बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में एक जैसी नीति पर काम हो रहा है। इस दिशा में राज्यों में स्थायी निवासी होने की शर्त को हटाने का भी निर्णय किया गया है। अब देश के किसी भी राज्य में जाकर मरीज अंग हासिल करने के लिए पंजीकरण करवा सकेगा।

पीएम ने कहा कि सरकार ने अंगदान के लिए 65 वर्ष से कम आयु की उम्र सीमा को भी खत्म करने का फैसला किया है। साथ ही उन्होंने देशवासियों से अंगदान के लिए ज्यादा से ज्यादा संख्या में आगे आने की अपील की। उन्होंने कहा कि आपका एक फैसला कई लोगों की जिंदगी बचा सकता है। जिंदगी बना सकता है। प्रधानमंत्री ने ये बातें रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 99वें संस्करण में कहीं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब एक व्यक्ति मृत्यु के बाद अपना शरीर दान करता है तो उससे 8 से 9 लोगों को एक नया जीवन मिलने की संभावना बनती है।

39 दिन की डोनर के माता-पिता से पीएम बोले-बेटी जीवन सफल कर गई

कम उम्र की अंगदाता अमृतसर की अबाबत कौर संधु ने 39 दिन की जिंदगी में इतिहास रच दिया। अबाबत की किडनी से पटियाला जिले के एक 15 वर्षीय किशोर को जीवनदान मिला था। पीएम मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम में अबाबत कौर के माता-पिता सुखबीर सिंह संधु और सुप्रीत कौर से बात की, और उनके फैसले की जमकर सराहना की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आपकी बेटी किसी दूसरे को जीवन देने के लिए ही इस धरती पर आई थी और कुछ दिनों में महान काम करके अपना जीवन सफल कर गई।

- **24 दिन की उम्र में आया था स्ट्रोक :** 28 अक्तूबर, 2022 को जन्मी अबाबत को 24 दिन की उम्र में स्ट्रोक आया था, जिसके बाद उसे पीजीआई में भर्ती कराया गया। उसके दिमाग में रक्त की आपूर्ति नहीं हो रही थी।

पीएम मोदी ने झारखंड निवासी 63 वर्षीय स्नेहलता चौधरी के बेटे से भी बात की। स्नेहलता की मृत्यु के बाद उनका दिल, किडनी और लिवर दान कर दिया गया।

100वें संस्करण को और यादगार बनाएंगे : पीएम ने कहा कि 'मन की बात' अपने 99वें पायदान पर आ पहुंचा है। आपके सुझाव और विचार ही 30 अप्रैल को होने वाले 100वें 'मन की बात' को और यादगार बनाएंगे।

देश के नए सामर्थ्य में नारी शक्ति की अहम भूमिका

पीएम ने कहा कि यह नवरात्र का समय है। शक्ति की उपासना का समय है। आज भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। उन्होंने कहा, ऐसा ही एक उदाहरण एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव हैं। इसी महीने प्रोड्यूसर गुनीत मोंगा और डायरेक्टर कार्तिकी गोंजाल्विस के वृत्तचित्र 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' ने ऑस्कर जीतकर देश का नाम रोशन किया। देश के लिए एक और उपलब्धि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र की वैज्ञानिक ज्योतिर्मयी मोहंती ने भी हासिल की। उनको रसायन और केमिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आईयूपीएसी का विशेष पुरस्कार मिला।

अंडर-19 महिला क्रिकेटरों का भी किया जिक्र : मोदी ने कहा कि इस वर्ष की शुरुआत में ही भारत की अंडर-19 महिला क्रिकेट टीम ने टी-20 विश्व कप जीतकर नया इतिहास रचा। वहीं, नगालैंड में 75 वर्षों में पहली बार दो महिला विधायक जीतकर विधानसभा पहुंची हैं। इनमें से एक को नगालैंड सरकार में मंत्री भी बनाया गया है। उन्होंने तुर्किये भूकंप में मदद करने गईं जांबाज बेटियों की भी तारीफ की।

बेटियां तीनों सेनाओं में शौर्य का परचम लहरा रहीं : पीएम ने कहा कि देश की बेटियां हमारी तीनों सेनाओं में अपने शौर्य का झंडा बुलंद कर रही हैं। ग्रुप कैप्टन शालिजा धामी लड़ाकू यूनिट में कमांड अपॉइंटमेंट पाने वाली पहली महिला वायुसेना अधिकारी बनी हैं। उनके पास करीब तीन हजार घंटे का उड़ान अनुभव है। इसी तरह भारतीय सेना की जांबाज कैप्टन शिवा चौहान सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी बनी हैं। ऐसी सभी महिलाएं, हमारी बेटियां आज भारत के सपनों को ऊर्जा दे रही हैं। नारीशक्ति की यह ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है।

'ମନ୍ କି ବାତ୍'ରେ ଓଡ଼ିଆ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଜ୍ୟୋତିର୍ମୟୀ ମହାନ୍ତିଙ୍କୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

मन की बात

पीएम मोदी ने अंगदान करने वाली स्नेहलता को बताया प्रेरणास्त्रोत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सरायकेला. स्नेहलता चौधरी सड़क हादसे के बाद भले ही जीवित नहीं रह पाई लेकिन उनके अंगों से चार लोगों को नया जीवन मिला है। अंगदान के लिए प्रेरणा बनी स्नेहलता चौधरी का नाम प्रधानमंत्री ने मन की बात के 99वें एपिसोड में लिया और उनके बेटे अभिजीत से बात की। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार अंगदान को बढ़ावा देने के लिए एक नीति बना रही है। इसके लिए स्थानीयता की शर्त को सरकार ने हटा दिया है। उन्होंने कहा कि अंगदान के लिए पहले 65 साल तक की उम्र सीमा तय थी,उसे खत्म कर दिया गया है, ताकि कोई भी व्यक्ति कहीं भी जाकर स्वेच्छा से अंगदान कर सके।

प्रधानमंत्री ने स्नेहलता चौधरी का जिक्र करते हुए कहा कि इनके जैसे दानवीर हमें और हमारे समाज को अंगदान का महत्व समझा कर जाते हैं। उनके इस महान कार्य के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं और मैं नमन करता हूं। यह हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि हमें संतोष है कि देश में ऐसा काम हो रहा है। इन प्रयासों के बीच अर्गन डोनर ज्यादा से ज्यादा संख्या में आगे आएंगे। अंगदान से बहुत से लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है।

गौरतलब है कि स्नेहलता पिछले 17 सितंबर को मार्निंग वॉक कर रही थीं, तभी एक बाइक सवार ने उन्हें टक्कर मार दी थी। हादसे में सिर में लगी चोट की वजह से डॉक्टर ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया। स्नेहलता की इच्छा अनुसार परिजनों ने ऑर्गन डोनेट कर दिया।

राष्ट्रीय अंग एवं प्रतिरोपण संगठन की व्यवस्था के अनुसार स्नेहलता का दिल, एक किडनी और कॉर्निया एम्स के मरीजों को दान किए गए, जबकि उनके लिवर का इस्तेमाल सेना के आरआर अस्पताल में किया जाएगा। उनकी दूसरी किडनी राम मनोहर लोहिया अस्पताल में एक मरीज को दी गई।

स्नेहलता के बेटे अभिजीत से की बात

प्रधानमंत्री ने मोदी ने स्नेहलता के बेटे अभिजीत से बात की। पीएम ने अभिजीत से कहा कि आपके पिता और माता दोनों नमन के अधिकारी हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूं और आपके पिताजी ने इतने बड़े निर्णय में, आप परिवार जनों का नेतृत्व किया, ये वाकई बहुत ही प्रेरक है और मैं मानता हूं कि मां तो मां ही होती है मां एक अपने आप में प्रेरणा भी होती है लेकिन मां जो परम्पराएं छोड़ कर के जाती हैं, वो पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक बहुत बड़ी ताकत बन जाती हैं। अंगदान के लिए आपकी माता की प्रेरणा आज पूरे देश तक पहुंच रही है।

99ନେ ମନ୍ କି ବାତ୍ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପ୍ରସାର

ಅಂಗಾಂಗ ದಾನಕ್ಕೆ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಕರೆ

PM PUSHES FOR DONATION OF ORGANS, HAILS OSCAR WINNERS

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged the countrymen to opt for organ donation, reiterating the Centre's decision to roll out a uniform policy, and removing the minimum age threshold and domicile rule to ease the process.

"It is said that when a person donates one's body after death, it creates a possibility for eight to nine people to get a new life," the PM said in the 99th episode of his Mann ki Baat broadcast.

During his address, the Prime Minister lauded the increasing "woman power" in the country.

"You all would have definitely seen Surekha Yadav, who became Asia's first loco pilot... of Vande Bharat Express. In the same month, producer Guneet Monga, and director Kartiki Gonsalves made the nation proud, by winning Oscar for their documentary *The Elephant Whisperers*," the PM said. —PTI

39 दिन की बच्ची के अंगदान करने वाले माता-पिता से पीएम मोदी ने की बात

पंजाब की नन्ही सी बेटी का बड़ा नाम

PM Modi praises women's T20 World Cup-winning U-19 team on 'Mann Ki Baat'

काशी-तमिल संगमम की तरह होगा सौराष्ट्र-तमिल संगमम: नरेंद्र मोदी

MANN KI BAAT

Demand for Kashmir's Delicious Lotus Stems increasing : PM Modi

Kashmiri farmers spreading fragrance of success: PM Modi

'Nadrus now exported to UAE'

'মন কী বাত'ত জাতীয় বীৰৰ প্ৰসংগ

লাচিত বৰফুকনৰ দেশপ্ৰেম বীৰত্বক উচ্চ প্ৰশংসা প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ

ਬੱਚੀ ਅਬਾਬਤ ਦੇ ਅੰਗਦਾਨ ਲਈ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ ਪੀਐੱਮ ਨੇ ਸਲਾਹਿਆ

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਕੀਤਾ 39 ਦਿਨਾਂ ਦੀ ਜਿਉਂਦੀ ਰਹੀ ਬੱਚੀ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ

अवयवदानासाठी नागरिकांनी पुढे यावे

पंतप्रधान नरेंद्र मोदींचे 'मन की बात'मधून आवाहन

स्त्रीशक्तीचा सन्मान

पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में दीव जिले के सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट का किया जिक्र

આજે દેશમાં ઓર્ગન ડોનેશન પ્રત્યે જાગૃતતા વધી રહી છે : વડાપ્રધાન

PM MODI HAILS PUNE SOCIETY IN MANN KI BAAT

WEB DESK

In the 99th edition of 'Mann Ki Baat', a monthly radio programme of Prime Minister Narendra Modi, he hailed a housing society in Pune for the effective utilisation of solar energy on Sunday.

PM Modi said that the speed with which India is moving in the direction of solar energy is an achievement in itself.

"Nowadays, renewable energy is being talked about in the whole world. When I meet people outside the country, they always talk about India's incredible success in this field. In Pune, Maharashtra, one such excellent effort has caught my attention," he said.

"Here the people of MSR-Olive Housing Society have decided that they would now run things of common utility like drinking water, lift and lights in the society with solar energy only. After this everyone together in this society got solar panels installed. Today about 90 thousand kilowatts hour electricity is being generated from these solar panels every year. This is resulting in saving of about 40,000 rupees every month. All the people of the Society are getting the benefit of these savings," he added.

The MSR-Olive Housing Society is located in Dattanagar, Ambegaon BK area of Katraj.

PM Modi also said that the 'Sabka Prayas' of the people is taking India forward in the direction of solar energy.

"People of this country have a special relationship with the sunlight. The scientific temperament and cultural devotion that we have had with the sun is hardly noticed anywhere else. I am happy that today every citizen is understanding the benefits of solar energy and is also contributing towards green energy. The spirit of this 'Sabka Prayas' is taking India forward in that direction," he said.

The last 'Mann Ki Baat' program was aired on February 26. Its first show was aired on 3rd October 2014.

'Mann ki Baat' is a monthly address, aired on All India Radio on the last Sunday of every month, through which Prime Minister Narendra Modi interacts with countrymen.

The show airs on All India Radio and Doordarshan's entire network, as well as on the AIR News website and newsonair mobile app. It will also be broadcast live on the Information and Broadcasting Ministry's, AIR News', DD News', PMO's and YouTube channels. Following the Hindi broadcast, AIR will broadcast the program in regional languages.

In the last programme, the PM touched upon a lot of topics while also declaring the winners of the 'Unity Day' special three competitions.

Mann Ki Baat: PM hails Snehlata Chowdhary of Saraikela for donating body parts

By Correspondent

Ranchi: Prime Minister Narendra Modi during his Maan Ki Baat broadcast hailed Snehlata Chowdhary of Saraikela after her family donated her body parts which gave new life to four other people. Speaking on the occasion he congratulated the family for this great gesture and said that the act was a source of inspiration. He said that Daanveer like them can help the society understand the importance of body part donation. He said that he was satisfied with the fact that such acts are taking place in the country due to which he was hopeful that going forward body donors will come more forward in the country. He said that body donation can help save many lives and the society even needs such people. The Prime Minister said that the government is making a policy for body parts donation and for which the criteria of domicile have been removed. He said that earlier the age limit for body donation was fixed at 65 years which has been done away with so that a person may go anywhere and donate the body. Snehlata Chowdhary had met with an accident on September 17 on the Gamharia main road. Initially the operation of her head was performed in Jamshedpur and later she was taken to Trauma center in AIIMS New Delhi. Her husband is a garment trader. Her brother Ravindra Aggarwal is an IAS and posted as Additional Director of the AIIMS. After she was declared brain dead by the doctors the family decided to donate her body parts which gave new life to four people and eye sight to two others. Snehlata herself was an active social worker and also worked for eye donation in her area. The heart, one kidney and cornea of her were given to patients of AIIMS while liver was used in RR Hospital of the Army and another kidney was donated to a patient in Ram Manohar Lohia Hospital.

எளிமையாகிறது!

- உடல் உறுப்பு தானம் செய்யும் நடைமுறை...
- 'மன் கீ பாத்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் தகவல்

சவுராஷ்டிரா தமிழ் சங்கமம்

Mann ki baat: Kashmir's Nadru is on high demand in country: PM

Agri dept mulling to distribute 15 lakh lotus seedlings this year: Director

"Lavender cultivation in Kashmir to be improved in coming years"

குஜராத்தில் அடுத்த மாதம் நடக்கிறது

ஆயிரம் ஆண்டு உறவை மீட்க சவுராஷ்டிரா - தமிழ் சங்கமம்

பிரதமர் மோடி பெருமிதம்

महिलाशक्तीचा सन्मान, अवयवदानाला प्रोत्साहन!

RisingKashmir

Mann ki baat: Kashmir's Nadru is on high demand in country: PM

ThePrint

Nari Shakti playing huge role in realising India's true potential: PM Modi in 'Mann Ki Baat'

HT Hindustan Times

'India's nari shakti...': PM Modi lauds these women achievers in 'Mann ki Baat'

OpIndia

PM Modi speaks about Saurashtra Tamil Sangamam in his Mann ki Baat, here is everything you need to know about the event

दैनिक जागरण

PM Modi ने 'मन की बात' में नारी शक्ति को सराहा, बोले- भारत के विकास में है महिलाओं की अहम भूमिका

अमर उजाला

मन की बात: कश्मीर के नंदडू और लैवेंडर का पीएम ने किया जिक्र, कहा- किसान गढ़ रहे सफलता के नए आयाम

NEWS18 हिंदी

99th Mann Ki Baat: कौन है यह पहली भारतीय महिला सैनिक, जो सियाचीन में संभाल रही मोर्चा, पीएम मोदी ने मन की बात में किया जिक्र

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार